

भगवान महावीर के 2600वें जन्म दिवस के अवसर पर उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो व उनकी शिक्षाओं पर प्रकाश डालता अनूठा सकलन

महावीरोदय

•

मुनि तरुणसागर

•

तरुण क्रांति मंच ट्रस्ट (रजि.), दिल्ली

• कृति
महावीरोदय

• कृतिकार
मुनि तरुणसागर

• आवरण चित्र
विपुलाचल पर्वत पर ध्यानस्थ तीर्थंकर महावीर
की राजा श्रेणिक द्वारा वन्दना

• द्वितीय संस्करण : 6 अप्रैल 2001
(भगवान महावीर 2600वां जन्मोत्सव)

• प्रतियां : 5000
कुल प्रतियां : 8000

• मूल्य : 20/- (बीस रुपए)

• प्रकाशन सौजन्य :
श्रीमती चन्द्रा देवी जैन
धर्मपत्नी श्री माणिकचंद पालीवाल
छावनी, कोटा (राज.)

• प्रकाशक ·
तरुण क्रांति मच ट्रस्ट (रजि)
70, डिफेन्स एन्क्लेव, दिल्ली-110092
फोन · 011-2223123

• प्राप्ति स्थान :
अहिंसा-महाकुंभ
196, सैक्टर-18, फरीदाबाद-121002
फोन : 5262549

• मुद्रक :
बुकमैन प्रिन्टर्स, दिल्ली-92. दूरभाष : 245 5684

महावीर के भक्त कितना 'जानते' और 'मानते' हैं महावीर को !

मुनिश्री तरुणसागर जी महाराज ऐसे ओजस्वी संत है जिनके पास नित नवीन क्रातिकारी विचारो की एक सतत शृखला हे और वे अपनी लेखनी के माध्यम से निरन्तर इन विचारो को देश व समाज के लाभार्थ प्रस्तुत करते रहते है। मुनिश्री के लेखन की विशेषता है कि वे पाठकों को आम जन-जीवन के उदाहरण, किस्से-कहानी सुनाते-सुनाते बडी-बडी जीवनोपयोगी शिक्षाए दे देते है। अपने प्रवचनो व लेखन मे वे कभी श्रोताओ/पाठको को उनकी गलतियो के लिए जोरदार डाट लगाते है तो कभी अपने प्रेम व आशीष की ऐसी रिमझिम फुहार बरसाते है कि सभी भाव-विभोर हो जाते हे। यही कारण ह कि जो भी मुनिश्री से एक बार मिल लेता है, वह बस उन्ही का होकर रह जाता है।

देश-विदेश मे चारो ओर भगवान महावीर का 2600वा जन्मोत्सव मनाने का हर्षोल्लास है। ऐसे मे मुनिश्री की लेखनी मे कोई कालजयी कृति जन्म न ले, ऐसा कैसे सभव है? यह अनुपम कृति प्रकट हुई 'महावीरोदय' के नाम से। पिछले काफी समय से विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ मे इस पुस्तक के बारे मे चर्चाए चल रही थी और यदा-कदा इसके कुछ अश भी पढने को मिल जाते थे। अतत मुनिश्री की यह बहुचर्चित, महत्वपूर्ण और सामयिक कृति आपके हाथो मे है।

पूज्यश्री का मानना है कि यदि कोई सिद्धान्त या तथ्य जन-साधारण को समझाना हे तो आवश्यक है कि उसकी दुरूहता व क्लिष्टता को समाप्त करके उसे सरल और सरस बनाया जाये। अपनी इसी अवधारणा पर कार्य करते हुए प्रस्तुत पुस्तक मे उन्होने भगवान महावीर के जीवन, व्यक्तित्व और कृतित्व से सम्बद्ध कुछ महत्वपूर्ण सस्मरणो/घटनाओ को सकलित किया हे। ऊपरी तोर पर पढने से ये सस्मरण मात्र कुछ रोचक किस्से या बोध-कथाए प्रतीत होती है लेकिन यदि इन्हे सच्चे हृदय से आत्मसात किया जाये तो इन सस्मरणो/घटनाओ से हमे अहिसा के अग्रदूत उस महामानव के बहुआयामी जीवन के विभिन्न पहलुओ और सन्देशो के सहज ही दर्शन हो जाते हे।

एक लम्बे अर्से से हम भगवान महावीर का जन्मोत्सव और निर्वाणोत्सव मनाते आ रहे हे। हर अगले जन्मोत्सव या निर्वाणोत्सव पर ऐसा लगता है कि उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तो और शिक्षाओ को जनजीवन मे लागू करने की आज पहले से भी अधिक आवश्यकता है।

प्रति वर्ष यह आवश्यकता बढ़ती जा रही है क्योकि हम हमेशा भगवान महावीर के नाम पर सतही आयोजन करते है, कभी भी उनको नजदीक से देखने या समझने का प्रयास नही करते। अब हम भगवान महावीर की 2600वी जन्म जयन्ती मना रहे हे। इतने समय से हम भगवान महावीर को 'मानने' और 'जानने' का दम भरते है, लेकिन ऐसा लगता है कि जिस विराट व्यक्तित्व पर गोरवान्वित होते हुए हम कभी अघाते नही, जिसके सबसे बड़े शिष्य और अनुयायी होने का दावा हम करते है, उस महावीर को हम अभी भी नही 'जानते' है और न ही 'समझते' हे।

धर्मप्रेमियो ने धर्म-प्रभावना के नाम पर भगवान महावीर के सैकडो मदिर बनवा दिये, हजारो मूर्तिया स्थापित कर दी और लाखो-करोडो पुस्तके छपवा दी लेकिन दिल से उनको आज तक स्वीकार नही किया। उनके सिद्धान्तो व शिक्षाओ मे से शायद ही कोई आज हमारे जीवन मे पूरी तरह प्रतिबिम्बित होता हो।

भगवान ने अपने जीवन मे प्रत्येक भौतिक वस्तु का त्याग कर दिया था ओर अपरिग्रह का अप्रतिम उदाहरण प्रस्तुत किया था लेकिन हम हे कि आज उन्ही के नाम पर 'महावीर वस्त्र भडार', 'महावीर रेस्टोरेट' या फिर 'महावीर जनरल स्टोर' चलाते है।

भगवान महावीर के मुख्य सिद्धान्तो—अहिसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एव अपरिग्रह—के सदर्भ मे हम अपन जीवन को देखे तो पायेगे कि शायद इनमे से एक भी सिद्धान्त को पूरी तरह हम अपने जीवन मे लागू नही कर पाए हे।

भगवान महावीर का मार्ग त्याग का मार्ग हे, अनासक्ति का मार्ग है। जब तक हम स्वय इस मार्ग पर नही चलेगे, कोई परिणाम नही निकल सकता। भगवान महावीर के सिद्धान्त आज भी उतने ही प्रासगिक है, जितने कि वे हमेशा थे। अब भगवान के 2600वे जन्मोत्सव के अवसर पर हम केवल उनका गोरव-गान ही न करे, अपितु उनकी शिक्षाओ ओर सिद्धान्तो को जीवन मे उतारे और दूसरो को भी यही प्रेरणा दे। यह निश्चित हे कि आज की दु खी दुनिया यदि भगवान महावीर के सत्य, अहिसा, अपरिग्रह ओर अनेकात के सिद्धान्तो को अपनाये, उन पर निष्ठापूर्वक आचरण करे तो चारो ओर व्याप्त वर्तमान अशाति, दु ख तथा सत्रास दूर होते अधिक समय नही लगेगा।

आज की पीड़ाजन्य परिस्थितियो मे मानवीय कुण्ठाओ तथा वेयक्तिक पीड़ाओ से त्रस्त मानव को महावीर की पवित्र वाणी ही शाति प्रदान कर सकती हे। आज 2600 वर्ष बाद भी भगवान महावीर के उपदेश उतने ही प्रासगिक है जितने कि उनके जीवन-काल मे या उसके बाद थे। अणुबम के वर्तमान युग मे 'जीओ और जीने दो' का सिद्धान्त ही पीडित और त्रस्त मानवता के लिए कल्याणकारी हो सकता हे। आज हमे देश, समाज ओर मानव मात्र के कल्याण के लिए भगवान महावीर के उपदेशो का पालन करना चाहिए, ताकि विश्व भर मे व्याप्त हिसा,

आतकवाद, युद्ध और विनाश का भय दूर हो सके और मनुष्य वास्तव मे 'मानव' बनकर जी- सीख सके।

भगवान महावीर ने जिस जीवन-दर्शन को निरूपित किया, उसके अनुपालन से व्यक्ति एवं राष्ट्र का जीवन इतना सयमनिष्ठ एव आचार-सम्पन्न बन जाता है कि वह फिर किसी का शोषण नही करता और उसमे इतनी शक्ति, पुरुषार्थ और क्षमता आ जाती है कि कोई दूसरा उसका शोषण नही कर सकता।

आज घृणा और अविश्वास के वातावरण मे सम्पूर्ण मानव जाति द्वारा किया जा रहे नवनिर्माण ओर प्रगति के प्रयासो का प्रयत्न मिट्टी मे मिल जाने का खतरा उत्पन्न हो गया हे। समूची मानव जाति का भविष्य अधकारमय दिखाई दे रहा है, लेकिन भगवान महावीर के अमर सदेश आज हमारे लिए बहुत सार्थक है और निश्चय ही उन्हे अपनाकर हम वर्तमान अधकार पर विजय प्राप्त कर सकते हे।

भगवान महावीर ने कहा हे—"जब तुम किसी को मारना, सताना अथवा अन्य प्रकार से कष्ट देना चाहते हो तो उसकी जगह अपने को रखकर सोचो। यदि वही व्यवहार तुम्हारे साथ किया जाए तो तुम्हे कैसा लगेगा? यदि तुम मानते हो कि तुम्हे अप्रिय लगेगा तो समझ लो कि दूसरे को भी अप्रिय लगेगा। यदि तुम नही चाहते कि तुम्हारे साथ कोई ऐसा व्यवहार करे तो तुम भी वैसा मत करो।"

भगवान महावीर का कथन है कि क्रोध को शाति से, अभिमान को नम्रता से, माया को सरलता से तथा लोभ को सतोष से जीता जा सकता है। वे एक क्रातिदूत थे और उन्होने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे क्राति की। उन्होने अपनी वाणी मे निरन्तर उद्घोष किया कि मानव अपने मन को मुक्त रखे, वासनाओ का त्याग करे तथा 'एक ध्येय, एक विचार' निश्चित करे। पुरातन काल मे जब लोगो ने इन बातो पर ध्यान दिया ओर इन्हे जीवन मे लागू करने का प्रयास किया तो अपेक्षित परिणाम भी दृष्टिगोचर हुए ओर यही कारण हे कि हमारा इतिहास बहुत समृद्ध हे। लेकिन जैसे-जैसे हमारा दृष्टिकोण बदला, हमने अपनी सस्कृति ओर सभ्यता को छोडा, वैसे-वैसे हम विनाश की ओर बढते चले गये ओर आज प्रतिपल दु ख व पीडा से कराह रहे है।

मुनिश्री तरुणसागरजी महाराज का मानना हे कि भगवान महावीर का बताया जीवन-मार्ग इतना साफ, सच्चा तथा सुगम है कि इससे किसी समाज या देश का ही नही, अपितु सम्पूर्ण विश्व का उद्धार हो सकता है। इसी वजह से मुनिश्री कहते है—"मै महावीर को मदिरो से मुक्त कराना चाहता हू, यही कारण है कि मेने आजकल तुम्हारे मदिरो मे प्रवचन करना बद कर दिया हे। मै तो शहर के व्यस्ततम चोराहो पर प्रवचन करता हू क्योकि मै महावीर को चोराहे पर खडा देखना चाहता हू। मेरी एक ही आकाक्षा है कि महावीर जैनो से मुक्त हो

ताकि उनके सदेश, उनकी चर्या, उनका आदर्श जीवन दुनिया के सामने आ सके।"

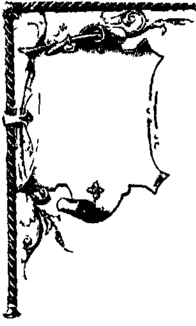
भगवान महावीर सामाजिक और व्यक्तिगत पीडा के प्रति बहुत अधिक सवेदनशील थे। वे मानव-मानव के बीच बन गई गहरी खाई को पाट देना चाहते थे। आज समाज मे इन्ही गुणो के न होने के कारण भाई भाई का और बेटा बाप का दुश्मन बन बैठा है। सच्चाई, करुणा, प्यार और न्याय-भावना का आज नितान्त अभाव है। भगवान महावीर कहते थे—"जीवन का सबसे बडा सत्य 'आत्मा' है और 'आत्मा' का सबसे बडा गुण प्रेम तथा करुणा है। करुणा और प्रेम से विहीन जीवन, जीवन नही श्मशान है। जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। घृणा के बदले घृणा और प्रेम के बदले प्रेम ही मिलेगा। दूसरो को दु ख अथवा क्लेश पहुचाकर स्वय को सुखी बनाना आपका लक्ष्य नही होना चाहिए।"

भगवान महावीर की यह विलक्षण ज्योति आज भी विद्यमान है लेकिन हम अपनी आखो पर पडे अधकार के पर्दे की वजह से उसे देख नही पा रहे है। जैसे ही हम इस पर्दे को हटाएगे तो पाएगे कि वह ज्योति हमारे बिल्कुल पास है और हमारी अपनी ही है।

मुनिश्री ने मुझ अल्पज्ञ को इस पुस्तक के विषय मे अपने विचार व्यक्त करने का सुअवसर दिया, इसके लिए उनके प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए उनके चरणो मे नमन करता हू। मेरा दावा है कि इस पुस्तक को एक बार पढना शुरू करके आप इसे समाप्त किए बिना छोड नही पाएगे और इसी दौरान भगवान महावीर के एक सदेश को भी यदि आपने जीवन मे उतार लिया तो लेखक का श्रम सार्थक हो जायेगा।

–राजीव जैन

सम्पादक—'बुकमेन टाइम्स' (मासिक)
एस-118 स्कूल ब्लाक
शकरपुर, दिल्ली-110092



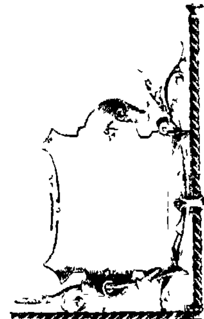


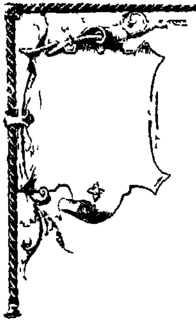
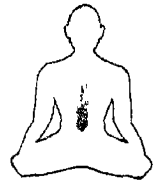
(1)

महावीर को जिह्वा में नहीं, जीवन में बसाएं। जब तक महावीर जिह्वा पर रहेंगे, जीवन में कोई परिवर्तन नहीं होगा। अगर जीवन, समाज व राष्ट्र में क्रांतिकारी परिवर्तन लाना है तो महावीर को मंदिरों से निकालकर मन में बसाना होगा, दीवारों से उखाड़कर दिल में बैठाना होगा। जिस दिन महावीर स्वामी हमारे दिल में बस जाएंगे उस दिन हमारा दिल दायरा से दरिया हो जायेगा। अभी हमारा दिल बहुत छोटा है, उसमें 'हम दो हमारे दो' ही समा पाते हैं लेकिन जब दायरा-दिल दरिया-दिल बनेगा तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भारतीय अवधारणा जीवन और जगत मे स्वतः चरितार्थ होती दिखाई देगी।





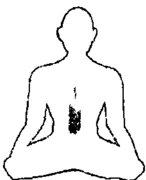


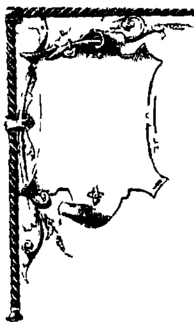



(2)

भगवान महावीर कभी के लिए नहीं, अभी के लिए है और सभी के लिए हैं। महावीर आज भी प्रासंगिक हैं। आज भी 'अप-टू-डेट' हैं। वे 'आउट-ऑफ-डेट' कभी नहीं हो सकते हैं क्योंकि वे 'विदाऊट-ड्रेस' थे। उन्होंने अपने जीवन काल में जिन शाश्वत जीवन-मूल्यों की स्थापना की थी वे आज भी आदर्श विश्व के निर्माण में सहयोगी हैं। महावीर स्वामी ने अहिंसा, अनेकान्त और अपरिग्रह के जो जीवन-सूत्र दिये थे वे अध्यात्म की दृष्टि से तो असाधारण हैं ही, राजनैतिक दृष्टि से भी उनके महत्व को नकारा नहीं जा सकता है। महावीर के अनुसार विश्व में व्याप्त ज्वलत समस्याओं का समाधान अणुबम कदापि नहीं हो सकता। इसके लिए उन्होंने अणुव्रतो की साधना पर बल दिया।





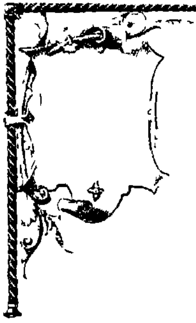



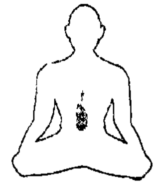

(3)

महावीर का समग्र जीवन सत्य की खोज और प्रयोग की कहानी है। महावीर के पास वाणी का विलास नहीं, जीवन का निचोड़ था। उनका कलम पर नहीं, कदम पर विश्वास था। महावीर जन्म की अपेक्षा कर्म पर ज्यादा जोर देते थे। उनका मानना था कि व्यक्ति जन्म से नही, कर्म से महान बनता है। उच्च कुल में जन्म लेना तो एक संयोग मात्र है लेकिन कुलीन होकर मरना वस्तुतः मानव जीवन की सर्वोच्च उपलब्धि है। वे आकाश से अवतरित नहीं हुए थे। वे तीर्थंकर थे। तीर्थंकर मनुष्य के भीतर ईश्वर को तलाशते हैं, तराशते हैं। स्वयं में ईश्वरत्व की आत्मा-भावना को जन्म देना तीर्थंकर महावीर की मौलिक साधना है।





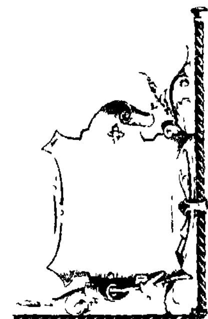


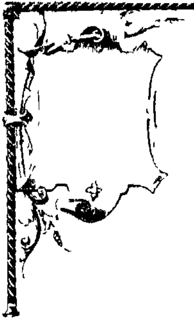
(4)

महावीर के मंदिर में हर आदमी की पहुंच होनी चाहिए। वहां किसी के प्रवेश पर निषेध नहीं होना चाहिए क्योंकि मंदिरों का निर्माण मनुष्य मात्र के लिए है। पापी से पापी व्यक्ति को महावीर तक पहुंचने का हक देना होगा तभी जैन धर्म 'विश्व-धर्म' बन सकता है। और किसी वजह से, यदि यह संभव न हो तो फिर भगवान महावीर की पहुंच हर आदमी तक होनी चाहिए। हमें दो में से किसी एक को चुनना होगा--या तो महावीर तक हर आदमी को पहुंचने का अधिकार देना होगा या फिर महावीर को हर तबके के आदमी तक पहुचाना होगा। यह समय की माग है। इसे समय रहते पूरा करना पड़ेगा वरना हम अपनी सदियों पुरानी पहचान खो बैठेंगे।





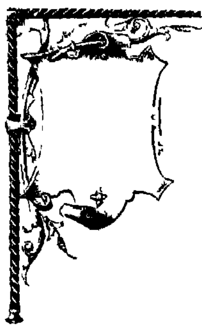





(5)

आज विज्ञापन और पैकिंग का जमाना है। किसी दुकान का माल कितना ही अच्छा क्यों न हो, यदि उसकी पैकिग आकर्षक न हो तो वह दुकान चलती नहीं है। जैन धर्म के पिछड़ेपन का कारण भी यही है। जैन धर्म के सिद्धांत तो अच्छे हैं लेकिन उसकी पैकिंग अर्थात् प्रस्तुति अच्छी नही है। अहिसा, अनेकांत और अपरिग्रह जैसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों पर आधारित जैन धर्म विश्व धर्म बनने की क्षमता रखता है लेकिन उसका व्यापक स्तर पर आकर्षक प्रचार-प्रसार न होने के कारण आज वह पिछड़ गया है। महावीर के पास माल तो बढ़िया है लेकिन उसका विज्ञापन बढिया नही है। यही वजह है कि बढ़िया माल भी धड़ल्ले से हाथो-हाथ बिकने की अपेक्षा धूल-धुसरित हो रहा है।





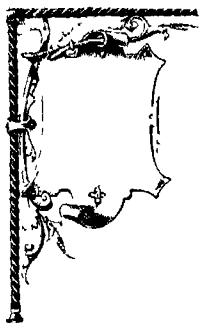
(6)

महावीर की सौ बार जय-जयकार करने की अपेक्षा यदि हम उनके द्वारा उपदिष्ट कोई एकाध आचरण अपने जीवन में उतार ले तो धन्य हो जाएं। हमारी भी जय हो जाये। मगर अफसोस है कि हम महावीर को तो मानते हैं लेकिन महावीर की नहीं मानते। हमने महावीर की प्रतिमा को तो अखंडित रखा मगर अपनी प्रतिभा (आचरण) को जगह- जगह से खंडित कर डाला। परिणाम, महावीर हमसे रूठ गए, छूट गए। याद रखें--जब तक हम महावीर स्वामी के 'जिओ और जीने दो' के जीवन दर्शन को आंतरिक जीवन में नहीं उतारेंगे, तब तक न तो हमारा उद्धार होगा और न ही समाज, देश और विश्व का कल्याण होगा।







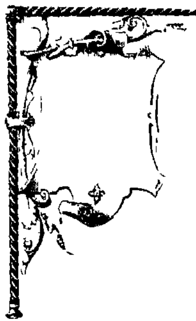



(7)

महावीर की पहचान अहिंसा से है और विश्व का भविष्य अहिंसा है। आज हिंसा और आतंकवाद से घिरी दुनिया में अमन-चैन लाने के लिए अहिंसक शक्तियों को आगे आना होगा। अहिंसा का झंडा थामने वाले लोग यह न समझें कि हम दुनिया की आबादी का मुट्ठी भर हैं, क्या कर सकते हैं? थोड़ी-सी हिम्मत और ईमानदारी से दुनिया को स्वर्ग में तब्दील किया जा सकता है, छोटी-सी चिंगारी ज्वाला बन जाती है। दुनिया में खून-खराबा बहुत हो चुका, अब अहिंसक-शक्तियां इससे निजात दिलाने आगे आए।





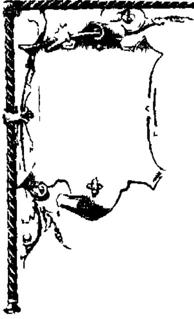




(8)

मैं महावीर को मदिरों से मुक्त करना चाहता हूं, यही कारण है कि मैंने आजकल तुम्हारे मंदिरों में प्रवचन करना बद कर दिया है। मैं तो शहर के व्यस्ततम चौराहों पर प्रवचन करता हूं, क्योंकि मैं महावीर को चौराहे पर खड़ा देखना चाहता हूं। मेरी एक ही आकांक्षा है कि महावीर जैनों से मुक्त हो ताकि उनका संदेश, उनकी चर्या, उनका आदर्श जीवन दुनिया के सामने आ सके। आज समय की मांग है कि हम महावीर और उनके दर्शन को विश्व मंच पर लाएं। वह धर्म कभी जिन्दा नहीं रह सकता जो मदिरो की दीवारों में कैद और शास्त्रों के वैष्टनों में बद हो, धर्म की चिर-जीविता के लिए उसे जीवन में उतारना और जगत में फैलाना परम अनिवार्य है।







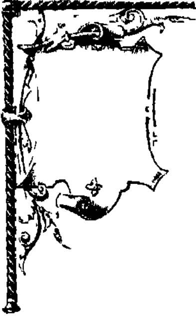
(9)

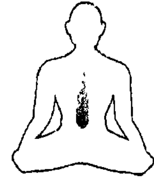
भगवान ऋषभदेव जैन धर्म की गंगोत्री हैं तो महावीर स्वामी गंगासागर। गगा अपने उद्गम स्थल (गंगोत्री) हिमालय से एक पतली लकीर के रूप में यात्रा शुरू करती है लेकिन जैसे-जैसे वह आगे सरकती है उसमें कई धाराएं आकर मिलती जाती हैं और वह विशाल होती चली जाती है तथा आगे चलकर गंगासागर का रूप धारण कर लेती है। जैन धर्म की गंगा भगवान ऋषभदेव से शुरू होती है। अजितनाथ से तीर्थंकर पार्श्वनाथ आदि बाईस तीर्थंकरों के धर्म-घाटों से गुजरती हुई महावीर के घाट तक पहुचते-पहुचते गंगासागर के विराट रूप को धारण कर लेती है। महावीर जैन धर्म की भव्य इमारत के भव्य कलश हैं तो ऋषभदेव नींव हैं। हम कलश को पूजें किन्तु नींव के पत्थर को न भूलें।











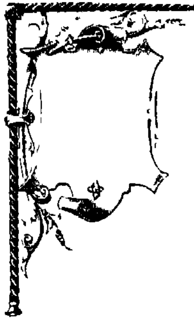
(10)

महावीर ने कहा—जन्म से न कोई शूद्र है और न कोई ब्राह्मण है अपितु हर व्यक्ति में चारों वर्ण समाये हैं। जब तक व्यक्ति सुबह नहा-धोकर पवित्र नहीं हो जाता तब तक वह शूद्र होता है क्योंकि उसके पहले वह जो भी करता है, वह देह के लिए करता है। जब नहा-धोकर मंदिर जाता है, पूजा-पाठ करता है तो वही व्यक्ति ब्राह्मण हो जाता है। जब दुकान पर जाकर व्यवसाय करने लगता है तब वैश्य और जब लड़ने-झगड़ने पर उतारू हो जाता है तब वह क्षत्रिय बन जाता है। देह शूद्र है, मन वैश्य है, आत्मा क्षत्रिय है और परमात्मा ब्राह्मण है। शूद्र की तरह पैदा होना दुर्भाग्य नहीं, शूद्र की तरह जीना और शूद्र की तरह मर जाना दुर्भाग्य है।







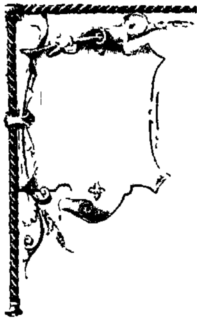
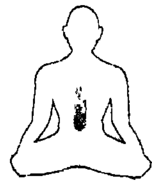



(11)

मैंने शिक्षा और दीक्षा महावीर को मंदिरों में पूजने के लिए नहीं ली, बल्कि उनकी शिक्षा को दुनिया भर के लोगों को बताने के लिए ली है। दरअसल आज दुनिया को फिर किसी महावीर की जरूरत है। एक ऐसे महावीर की जो हिंसा, हत्या और कत्ल के घने अंधकार में अहिंसा, करुणा और प्रेम के दीप जला सके। अहिंसा को उसकी सम्पूर्ण गरिमा और तेजस्विता लौटा सके। महावीर के संदेश 'जिओ और जीने दो' में सिर्फ चार शब्द नहीं वरन् चार वेद भी हैं, चार धाम भी हैं, चार अनुयोग भी हैं, जिन्हें आज पुनः प्रवर्तित और प्रचारित करने की सख्त जरूरत है।





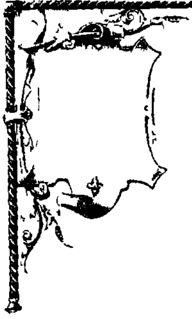




(12)

महावीर से गौतम ने पूछा–भंते! सब लोग तो संसार नहीं छोड़ सकते तो फिर वह कौन-सी जीवन-शैली है जिसे जीकर व्यक्ति घर-परिवार मे रहते हुए स्वयं का कल्याण, अपनी आत्मा का उद्धार कर सकता है? महावीर ने कहा–घर को तपोवन बनाकर जिओ। गौतम ने पुनः सविनय पूछा–प्रभो! मैं आपका आशय समझा नहीं, कृपया स्पष्ट करें। महावीर बोले–घर में अतिथि की भांति रहो, कुछ भी अपना मत समझो। डर-डर कर व्यवहार करो। सब का हित चाहो। किसी को अपने व्यवहार से दुःख न पहुंचाया जाए–इस बात का ख्याल रखो। ममता मत बढ़ाओ। अतिथि को घर से चले ही जाना है–इसको हमेशा याद रखो।







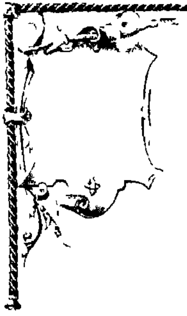
(13)

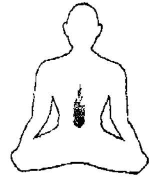
श्रेणिक ने महावीर से पूछा–भंते! साधक कैसे चले? कैसे खड़ा हो? कैसे बैठे? कैसे सोए? कैसे भोजन करे? कैसे बोले–जिससे पाप-कर्म का बन्ध न हो? महावीर ने कहा– आयुष्मन! साधक होश में चले; होश में खड़ा हो, होश में बैठे, होश में सोए, होश में भोजन करे और होश में ही बोले तो उसे पाप-कर्म नहीं बंध सकता। मूर्च्छा ही पाप है। बेहोशी ही हिंसा है। दुनिया कहती है कि शराब पीने के बाद आदमी बेहोश हो जाता है मगर महावीर कहते हैं–सच्चाई तो यह है कि बेहोश आदमी ही शराब पीता है। दरअसल होश में आदमी शराब पी ही नहीं सकता। दुनिया के सारे पाप और अपराध बेहोशी और मूर्च्छा में ही होते हैं।











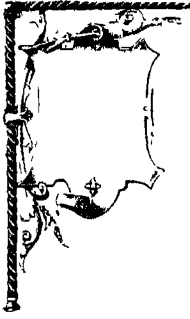
(14)

महावीर का मार्ग वीतरागता है। गौतम ने भगवान से पूछा–भंते! मुझे कैवल्य की उपलब्धि क्यों नहीं हो रही है? महावीर ने कहा–गौतम! तुम्हारे मन में राग है? भगवान के वचन सुनकर गौतम को आश्चर्य हुआ। मुझमे और राग? गौतम ने पुनः पूछा–भंते! मैं कुछ समझा नहीं, स्पष्ट कीजिए। महावीर बोले–गौतम! सांसारिक राग तो तुम्हारे मन में नहीं है लेकिन मेरे प्रति जो राग है उसी ने तुम्हारे कैवल्य को रोक रखा है। तीर्थंकर ने कहा–गौतम! महावीर को पाने के लिए पहले दुनिया को छोडना पड़ता है और फिर स्वयं को पाने के लिए महावीर को भी छोड़ना पड़ता है–यही जैन धर्म है।







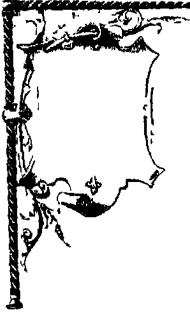



(15)

राजगृह के विपुलाचल पर तीर्थंकर महावीर ने मगध नरेश से कहा था–श्रेणिक! इन्द्रियों की दासता दुखद है। हिरण संगीत रसिक है, बासुरी की मीठी धुन पर वह अपने प्राणों को गंवा देता है। हाथी स्पर्श की इच्छा से मारा जाता है। गंध का लोभी भंवरा कमल में बंद होकर अपनी जान दे देता है। रूप पर मोहित होकर पतंगा ज्योति पर जल मरता है। स्वाद के कारण मछली कांटे में फंस जाती है। अतः साधक को चाहिए कि वह इन पंच इन्द्रियों के आकर्षण में आसक्त न हो, जितेन्द्रिय बने। इन्द्रियां स्विच हैं, मन मेन-स्विच है। मेन-स्विच बंद कर दे तो फिर स्विच काम नहीं करते। मन रूपी मेन-स्विच बद कर दें तो इन्द्रियों रूपी स्विच स्वत: काम करना बंद कर देते हैं।



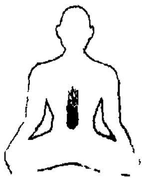


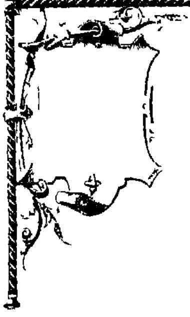




(16)

महावीर जैनों की बपौती नहीं हैं। वह तो सम्पूर्ण मानव जाति के लिए धरोहर हैं। महावीर जैन नहीं थे, और न ही महावीर ने कभी कहा कि मैं जैन हूं। महावीर 'जिन' थे। जिन का अर्थ होता है जीतना। जिसने अपने मन और इन्द्रियों, कर्मो और कषायों को जीत लिया वह 'जिन' है, उसी को 'जिनेन्द्र' कहते हैं, तथा जो उसकी पूजा करता है वह जैन कहलाता है। जैन कोई जाति नहीं, वह एक उच्च आचरण है, एक स्वस्थ जीवन-शैली है। इस शैली को अपनाकर कोई भी प्राणी जैन हो सकता है, यहां तक कि पशु भी। स्वय भगवान महावीर को सम्यकत्व धर्म की उपलब्धि सिंह की पर्याय में हुई थी।





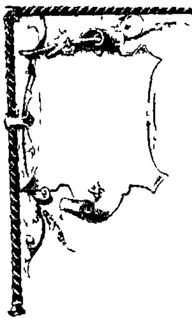




(17)

महावीर के यों तो असंख्य भक्त हैं मगर भक्त शिरोमणि मेढक सर्वोपरि हैं। घटना है कि राजा श्रेणिक हाथी पर बैठ कर हीरे-मोतियों से भगवान की पूजा करने चला। उधर एक मेढक भी अपने मुख में कमल पंखुड़ी दबाकर भगवान के दर्शन को निकल पड़ा। मगर रास्ते में हाथी के पांव तले दबकर उसकी मृत्यु हो गई और वह मरकर देव बन गया। महावीर कहते हैं, अहंकार के हाथी पर चढ़कर मेरे दर्शनों को आने वाला राजा श्रेणिक कब पहुंचेगा, मैं नहीं जानता। लेकिन वह मेढक जो उछलता- फुदकता आ रहा है, वह निश्चित ही श्रेणिक से पहले मुझे पा लेगा। मुझे नहीं पता कि श्रेणिक के हीरे-मोती महावीर ने स्वीकारे अथवा नहीं, लेकिन मेढक की झूठी कमल पंखुड़ियों को महावीर अस्वीकार न कर सके।





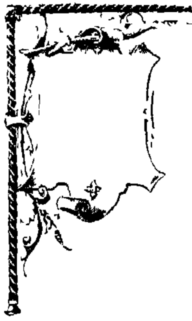




(18)

महावीर दुनिया से जा सकते हैं, लेकिन भक्तों के हृदयों से नहीं जा सकते। संकटों से घिरी चदन बाला जब कभी महावीर को पुकारेगी तो चंदना के हाथ में बधी हथकड़ियों और पांवो की बेड़ियो को कंगन और पाजेब बनने में देर न लगेगी। जब भी टीले पर किसी गाय का दूध आपो-आप झर गिरेगा और वहां ग्वाला खुदाई कर देखेगा तो उसे महावीर के ही दर्शन होंगे। महावीर के स्मरण अतिशय से सेठ सुदर्शन की सूली सिंहासन में बदल जाती है तो दीवान अमरचन्द पर चलाये गये तोप के गोले ठंडे पड जाते है। भक्त तो स्मृतियो मे ही भगवान के दर्शन कर लेता है, तभी तो कहा है–'भक्त के वश में है भगवान।'





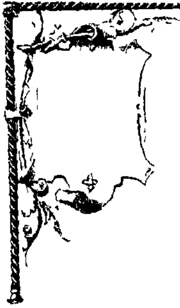
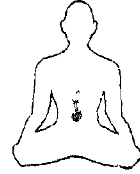




(19)

महावीर का बचपन का नाम वर्धमान था। उनके जन्म लेते ही राज्य में सुख-शांति, धन-वैभव बढ़ता ही गया, इस कारण मां-बाप ने उनका नाम वर्धमान रखा। फिर जन्माभिषेक के समय इन्द्र की शंका निवारण हेतु वर्धमान ने अपने पांव के अंगूठे से सुमेरू पर्वत को कम्पित कर दिया तब इन्द्र ने 'वीर' नाम दिया। पलने में झूलते बालक वर्धमान को देखते ही दो मुनियों की तत्व-शंका को समाधान मिला, अतः उन्हें 'सन्मति' कहा गया। फिर थोड़े दिनों बाद जिस समय वर्धमान मित्रों के साथ खेल रहे थे, सर्प का रूप ले परीक्षा लेने आये देव का उन्होंने मान-मर्दन कर दिया तब उस देव ने उन्हें 'अतिवीर' कहकर पुकारा। और आखिर मे नगर मे उपद्रव कर रहे पागल हाथी को एक ललकार से वश में कर लेने से कुण्डलपुर वासियों ने 'महावीर' नाम का जयघोष किया।





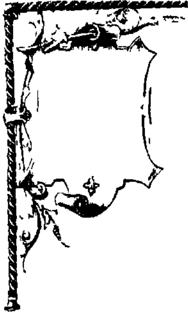




(20)

आज तुम्हारे मंदिर बूढ़े हो गये हैं क्योंकि उनमें युवाओं ने जाना बंद कर दिया है। जब युवाओ का मदिरो मे प्रवेश बद हो जाता है तो मंदिर बूढे और फीके हो जाते हैं। धर्म उनकी संपदा है जो युवा हैं, युवा-चित्त हैं। तीर्थंकर महावीर पृथ्वी पर ऐसे पहले दार्शनिक हैं जिन्होंने धर्म को युवा से जोड़ा। महावीर ने कहा–यौवन और धर्म का गहन मेल है। धर्मयात्रा में ऊर्जा चाहिए और यौवन ऊर्जा का भडार है। धर्म की पहली पसंद युवा हैं। जब तुम्हीं बूढ़े व्यक्ति को गोद लेना पसद नही करते तो भला धर्म बूढ़े इंसान को गोद लेना क्यो पसंद करेगा। धर्म बुढापे की औषधि नहीं, युवा होने का 'टॉनिक' है। धर्म केवल बुजुर्गो की सम्पत्ति नहीं, युवाओ की अमानत भी है।





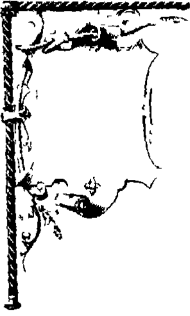



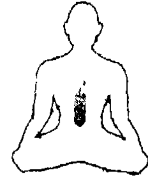

(21)

हम महावीर को ऐसे जिएं कि मन में लहरें उठें तो बस महावीर के प्रेम की, हाथ उठें तो उनकी जय-जयकार के लिए, कदम बढ़ें तो श्री महावीर के मंदिर की ओर, होंठों से शब्द फूटें तो महावीर के प्यार-दुलार से सने। आंख खुले तो बस महावीर के दर्शनों के लिए और मुंदे तो उनके ध्यान के लिए, क्योंकि मन की आंखें न खुलें तो मस्तक की आंखें मात्र मोर-पंख की आंखें बनी रहती हैं। नींद में सपने भी आएं तो बस श्री महावीर के। इस तरह जब हमारा जीवन महावीर के रंग में रंग जाएगा तो धन्य हो जाएगा। बूंद जब सागर में मिलती है तो सागर बन जाती है, फिर हम महावीर की भक्ति में रमकर महावीर क्यों नहीं बन सकते?







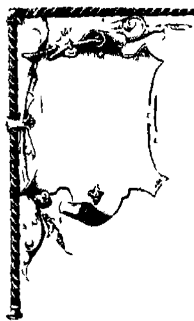
(22)

महावीर जैसा मौनी और मुखर मनुष्य जाति के इतिहास में कोई दूसरा नहीं हुआ। महावीर से ज्यादा कोई नही बोला और उनसे ज्यादा कोई चुप भी नहीं रहा। नहीं बोले तो बारह वर्षो तक एक शब्द नही बोले, अखड मौन रहे और मौन भी ऐसा कि चले तो चलने की पदचाप भी सुनाई न दी और बोले तो ऐसा बोले कि रोम-रोम बोल पड़ा, सर्वाग से बोल पड़े कि ऐसे 11 अंग, 14 पूर्व भर गए। गौतम सरीखे गणधर थक गए, वाचस्पति भी चरणो में झुक गए। महावीर ने कहा–कम बोलो, काम का बोलो। जो नपा-तुला बोलता है, उनके बोल दुनिया सदा याद रखती है। महावीर के बोल अनूठे है, वक्तव्य बेमिसाल है। जीवन के आनद की यात्रा करने की भावना हो तो महावीर के बोलों को अपने जीवन के बोल बनाओ।







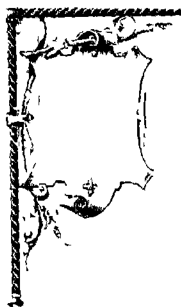



(23)

भगवान महावीर जगद्गुरु थे। महावीर ने घर छोड़ा और संन्यास लिया तो फिर गुरु के पास नहीं गये अपितु उस समय के सभी गुरु स्वयं महावीर के पास आये और महावीर से ज्ञान लिया। इनमें इन्द्रभूति, अग्निभूति, वायुभूति जैसे गुरुओं के नाम जग-जाहिर हैं। इस कारण महावीर सही मायने में जगद्गुरु थे। ऐसे जगद्गुरु नही कि एक चेला बनाया, उसक नाम 'जगत' रखा और जगत के गुरु होने से जगद्गुरु हो गए। गुरु-शिष्य के संबंध में महावीर ने कहा–गुरु, अपने शिष्य के मन का ख्यान रखे और शिष्य अपने गुरु के तन का ख्याल रखे। गुरु को ध्यान रहना चाहिए कि मेरे शिष्य का मन न बिगड जाए और शिष्य को ध्यान रहना चाहिए कि मेरे गुरु का तन न बिगड़ जाए।





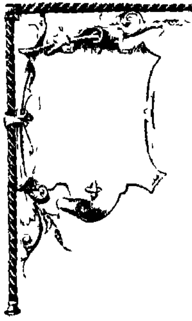
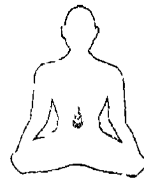




(24)

महावीर स्वामी ने अहिंसा और अपरिग्रह पर बहुत ही बल दिया। उनके अनुसार अहिंसा ही परम धर्म है। महावीर स्वयं बड़े थे मगर जब महावीर कहते हैं कि अहिंसा धर्म सबसे बड़ा है तो उसकी प्रतिष्ठा स्वतः हो जाती है। महावीर ने कहा–हिंसा सबसे बड़ा पाप है क्योकि जीवों की हिंसा के समय दारुण वेदना की जो तरंगें निःसृत होती हैं वे इतनी शक्तिशाली होती हैं कि उनके प्रभाव से पृथ्वी में तीव्र कम्पन और भूकम्प जैसी विनाशकारी परिस्थितियां उत्पन्न हो सकती हैं। अतः आत्मरक्षा और पर्यावरण सन्तुलन की दृष्टि से भी अहिसा परम धर्म है।





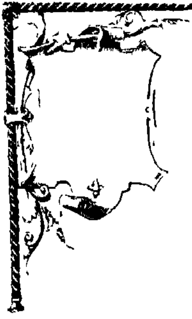




(25)

महावीर सबके थे, सब महावीर के थे। महावीर की दृष्टि में अपना-पराया जैसा कोई भेद न था। महावीर केवल सिद्धार्थ और त्रिशला के लिए नहीं जन्मे थे, वह तो सम्पूर्ण मानव जाति के कल्याण के लिए जन्मे थे। महावीर का संदेश पूरी मानवता के लिए है। जैसे सूर्य-चांद का प्रकाश सबके लिए है, आग सबकी रोटियां सेंकती है, जल सबके गले की प्यास बुझाता है, वृक्ष की छाया सबके लिए होती है, वैसे ही महावीर और उनका संदेश सबके लिए है। महावीर केवल जैनों के लिए नहीं, वे तो जन-जन के लिए हैं। मां पर सभी बेटों का समान अधिकार होता है, महापुरुषों पर भी पूरी मानव जाति का अधिकार होता है।



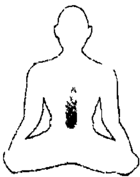


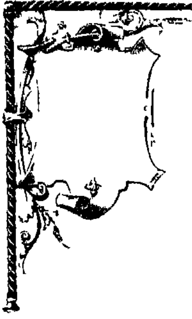




(26)

राजकुमार वर्धमान अभी 5 वर्ष के हुए ही थे कि सिद्धार्थ ने बर्धमान के विद्याध्ययन के लिए एक आचार्य को नियुक्त कर दिया। अध्ययन के पहले ही दिन वर्धमान ने अपनी प्रज्ञा से आचार्य को निरुत्तर कर दिया। हुआ यों कि आचार्य ने वर्धमान से कहा–'वर्धमान! बोलो–एक।' वर्धमान बोले–'एक'। आचार्य ने समझाया–'एक यानि आत्मा।' फिर आचार्य ने कहा–'बोलो दो।' वर्धमान ने कहा–'बस, अब कुछ भी बोलने-जानने की जरूरत नहीं है।' आचार्य ने पूछा–'क्यों?' वर्धमान महावीर ने कहा–'जे एगं जाणई, ते सव्व जाणई' अर्थात् जो एक (आत्मा) को जान लेता है वह सबको जान लेता है। वर्धमान के समक्ष आचार्य मौन थे। आचार्य ने सिद्धार्थ से कहा–'महाराज, यह शिशु नहीं, जगद्-आचार्य है, इसे कोई क्या सिखायेगा। क्या सूर्य को पथ दिखाने के लिए कहीं दीप जलाये जाते है?'





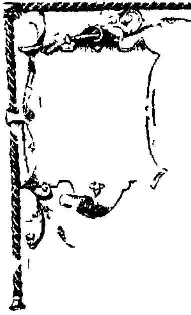




(27)

नागराज चंडकौशिक भयंकर विषधर था। वह जिस जगह रहता था, इंसान का उस रास्ते से गुजरना तो बहुत दूर, बिना नागराज की इच्छा के फूल की एक पंखुड़ी भी नहीं खिल सकती थी। इतना आतंक था उसका। एक दिन महावीर अचानक उसके सामने पहुंच गए। चंडकौशिक क्रोध में आग-बबूला हो गया और गुस्से में महावीर के पैर के अगूठे पर दंश प्रहार किया। चंडकौशिक यह देखकर हैरान था कि महावीर खड़े-खड़े मुस्करा रहे हैं और अंगूठे से खून की जगह दूध की धारा बह रही है। महावीर ने सम्बोधा—'नागराज! पिछले जन्म के क्रोध के दुष्फल अब भोग रहे हो और अब भी क्रोध न छोड़ा तो तुम्हारी पुनः दुर्गति निश्चित है।' महावीर के इस सम्बोधन से चंडकौशिक की अन्तर्रात्मा जाग गई और उसका क्रोध जाता रहा।







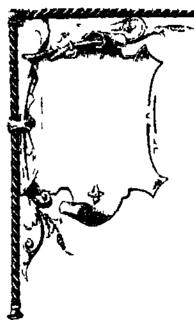
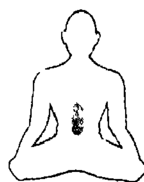
(28)

महावीर का बचपन था, मगर उनमें बचपना नहीं था। महावीर जवान भी हुए लेकिन महावीर ने जवानी को मन पर नहीं चढ़ने दिया, अपितु खुद ही जवानी पर चढ़ गए और जो जवानी पर चढ़ जाते हैं, जवानी उनके घर पानी भरने लग जाती है। 30 वर्ष की भरी जवानी में महावीर जाग गए, न केवल जाग गए बल्कि असंख्य सुषुप्त आत्माओं को जगा गए। महावीर जागरण के देवता हैं, आचरण के आचार्य हैं, चिंतन के चांद हैं, साधना के सूत्र हैं। महावीर को पाकर मानवता गौरवान्वित है। भारत को गर्व है अपने पर क्योंकि उसने दुनिया को तीर्थंकर महावीर जैसा प्रज्ञा-पुरुष दिया।





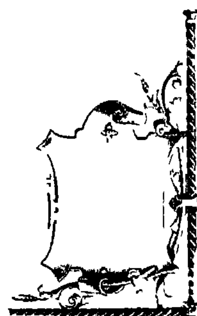


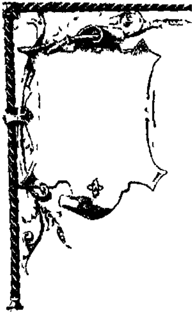



(29)

महावीर ध्यान-मग्न थे। देवराज इन्द्र प्रभु की सेवा में उपस्थित हुए और बोले–भगवान! अज्ञानी लोग आपको बड़ा कष्ट देते हैं। वे नहीं जानते कि आप कौन हैं, कितने महान हैं। आज से यह सेवक आपकी सेवा में रहेगा। महावीर ने कहा–देवराज! मैं अपने कष्टों की कभी चिंता नहीं करता। कोई कितना ही कष्ट दे, लेने वाले का कभी कुछ नहीं बिगड़ता क्योंकि यह सब तन तक ही है। अन्दर में आत्मा तक तो इसका एक अणु भर अंश भी नहीं पहुंचता। मुझे अपनी चिंता नहीं है, मुझे तो यह चिता है कि तुमने अज्ञानता के कारण मुझे जो कष्ट पहुंचाए हैं, उसका भविष्य में तुम्हें क्या फल मिलेगा? यह थी महावीर की करुणा।



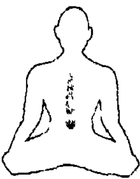



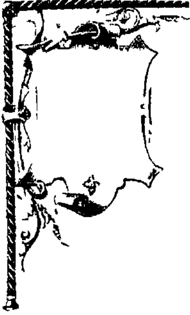



(30)

राजा श्रेणिक महावीर का कट्टर भक्त था। बिना भगवान के दर्शन किए जल की एक बूंद भी मुंह में नहीं डालता था। पर आन्तरिक जीवन से गिरा हुआ था। एक दिन श्रेणिक ने भगवान से पूछा–भंते! मैं मृत्यु के बाद कहां जन्म लूंगा? भगवान ने कहा–नरक में। आपका भक्त और नरक जाए–भगवान यह तो आपकी बड़ी बदनामी है। महावीर ने कहा–नरेश! झूठ मत बोलो। ध्यान-मग्न मुनि के गले में मृत सांप डालकर तुमने जो पाप किया है, वही पाप तुम्हें नरक ले जायेगा। मेरी पूजा करके तुम संत-अपमान के दंड से नही बच सकते।







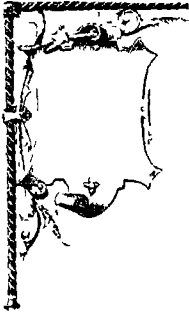
(31)

मैं की मृत्यु ही महावीर का जीवन है। महावीर को पाना है, महावीर को जीना है, महावीर को समझना है तो अहंकार और ममकार को छोडना आवश्यक है। अहंकारी व्यक्ति की दशा तो घंटाघर पर बैठे उस बंदर के समान है जो घंटाघर की ऊंचाई को अपनी ऊंचाई समझ रहा है। महावीर का वक्तव्य हे कि अहंकार के हिमालय से नीचे उतरे बिना मुक्ति संभव नही है। अहंकार एक आध्यात्मिक कैंसर है, इसका उपचार णमोकार है। अहंकार और णमोकार दो विपरीत दिशाएं हैं। भगवान महावीर ने कहा–जहां णमोकार मत्र होगा वहा अहंकार नहीं रह सकता। णमोकार का उपासक अहंकारी नही होता। और यदि अहंकार जीवन पर हावी है तो समझना अभी हमने णमोकार को सही अर्थो मे जिया ही नहीं।





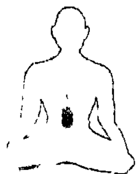


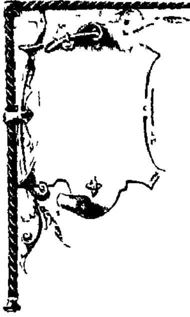



(32)

भगवान महावीर का एक शिष्य जोर-जोर से धर्म का उपदेश देकर भीड़ एकत्र करता था। महावीर ने उससे पूछा—वत्स! सड़क पर आती-जाती गायों को गिनने वाला क्या उनका स्वामी हो जाएगा? शिष्य ने उत्तर दिया, नहीं बिल्कुल नहीं। स्वामी तो गायों की देखभाल करता है। महावीर ने कहा—वत्स, उसी तरह केवल धर्म-धर्म चिल्लाने से किसी पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। धर्म को जीवन में उतारो, तभी कोई तुम्हारे धर्म से प्रेरित-प्रभावित होगा। धर्म चर्चा नहीं है, वह चर्या है, उच्चारण नहीं है, आचरण है। धर्म जीवन का प्रयोग है, उसे जिव्हा से नहीं, जीवन से दर्शाओ।







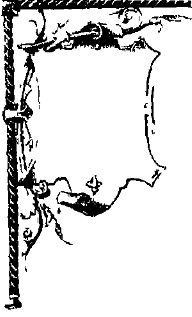
(33)

महावीर का निर्वाण अमावस्या की रात को हुआ। बुद्ध को ज्ञान पूर्णिमा की रात को हुआ, मगर बुद्ध की बात समझ में आती है, बाहर चांद खिल रहा हो और भीतर भी एक चांद प्रकट हो जाए तो कोई आश्चर्य जैसा नहीं है। मगर अमावस की अंधेरी रात में पूनम का चाद चमक उठे तो आश्चर्य तो है ही। महावीर के साथ यही हुआ। कार्तिक कृष्णा अमावस्या की रात थी और महावीर पावापुर से मुक्त हो गए और इस तरह अंधेरी रात असंख्य दीयों की रोशनी से नहा उठी। अमावस की रात दीपावली की रात बन गई। दरअसल महावीर ने यह सिद्ध कर दिया कि जिन्हें मंजिल की तलाश है, उन्हें अंधेरों की चिंता नहीं करनी चाहिए।











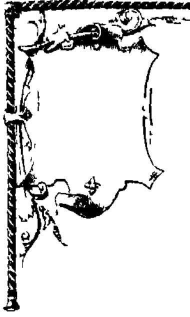
(34)

महावीर सर्वोदय के प्रतीक हैं। आचार्य समन्तभद्र ने महावीर-स्तुति में कहा–'सर्वोदय तीर्थमिद तवैव'। भगवान आपका शासन सर्वोदय है। विश्व धर्म वह हो सकता है जिसमें सबका उदय है। महावीर की वाणी में सबका उदय है। महावीर ने कहा–'अप्पा सो परमप्पा'। आत्मा ही परमात्मा है। पूरी पृथ्वी पर महावीर ही ऐसे महान दार्शनिक हुए जिन्होने प्रत्येक प्राणी को परमात्मा बनने का मौलिक अधिकार दिया। महावीर के धर्म में विश्वधर्म के मंत्र हैं। आज की दुनिया की ज्वलत समस्याओं का सटीक समाधान महावीर से बेहतर शायद किसी के पास नही है। आज नहीं तो कल दुनिया जरूर महावीर के पास आयेगी और जीवन-मुक्ति का उपाय पूछेगी।











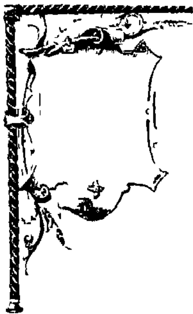
(35)

महावीर स्वामी से गौतम ने पूछा–भंते! हम सब कौन हैं तथा ससार से हमारा क्या संबध है? और यहां याद रखने जैसा क्या है? महावीर ने कहा–गौतम! हम सब यात्री है। हमारा संबध नदी-नाव जैसा है। देर-सवेर तो विदा होना ही है। मिलन के क्षण में भी विदाई न भूलें। किसी से मिलो तो ध्यान रखना कि कल बिछुड़ना है। किसी से हाथ मिलाओ तो यह मत भूलो कि कल इसे अलविदा कहना है। फूल खिले तो खिले फूल में मुरझाये फूल को देख लेना और जीवन मिले तो मिले जीवन में मिली मौत को मत भूल जाना।





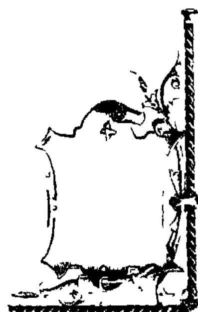


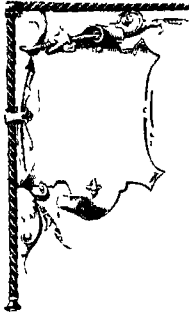



(36)

महावीर से लोगों ने पूछा–दुनिया का सबसे बड़ा धर्म कौन सा है? महावीर ने कहा–'अहिंसा संयमो तवो'। अहिंसा, संयम और तप–ये तीन धर्म के प्राण हैं। जिस धर्म में इनकी पूजा हो, इन्हे जीने की प्रेरणा हो, और इनका मूल्य हो, वही सबसे बड़ा धर्म है। महावीर ने कहा–सभी धर्म अच्छे हैं। मगर उनके अनुयायी अच्छे नहीं हैं। आज हर धर्म का अनुयायी भीतर से खोखला है। उसमें अपने आदर्शों की ऊर्जा नहीं है। धर्म का हमने जो चोला पहन रखा है, इसे एक बार झड़काने की जरूरत है। इसमें धूल-धवास भर गया है। अपने घर के आंगन में एक ऐसा पेड़ लगाओ जिसकी छाया पड़ोसी के घर जाती हो, यही तुम्हारे लिए सबसे बड़ा धर्म है।



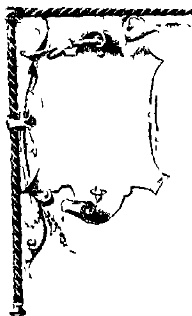



(37)

भगवान महावीर का समय दुराग्रह का युग था। महावीर के समय मे हर व्यक्ति की अपनी निजी मान्यताएं थीं, जिनपर न सिर्फ वह अटल था बल्कि उन थोथी मान्यताओं को दूसरे पर बलात् थोपने का भी भरसक प्रयास करता था। ऐसे समय में महावीर ने विश्व-समुदाय को एक मौलिक सिद्धांत दिया। वह सिद्धान्त था–अनेकान्त दृष्टि। वस्तु के अनेक विरोधी धर्मो को सापेक्ष-दृष्टि से देखना और स्वीकार करना अनेकान्त है। ऐसा 'ही' है–यह एकान्तवाद है। ऐसा 'भी' है–यह अनेकान्त की भाषा है। महावीर ने कहा–सत्य का आग्रह नहीं होता। सत्य के विरोधी को अपने मन का द्वार खुला रखना पड़ेगा। सामने वाला भी सच हो सकता है–इसे स्वीकारें।



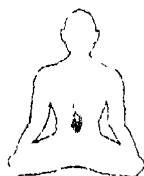


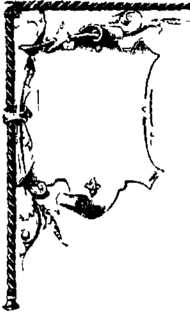




(38)

महावीर ने कहा–किसी बूढ़े आदमी को लकड़ी के सहारे चलते देख हंसना मत, किसी गरीब की दीन-हीन अवस्था देख उसका उपहास मत उडाना, जवानी के जोश में आकर अधिक इतराना मत। क्या पता कल तुम्हें ही उन्ही अवस्थाओ से गुजरना पड़े जिन अवस्थाओं में तुमने दूसरे को देखकर उनका मजाक उड़ाया था। जिस जवानी पर तुम इतना इतराते थे, वही जवान शरीर बुढ़ापे की कृशकाय हालत मे आंसू बहाता दिखाई देता है। इंसान को अपनी उपलब्धियो पर कभी अहकार नहीं करना चाहिए। जिन्दगी मे जो भी कुछ मिला है, वह सदा के लिए नही मिला है। हमेशा के लिए यहां कभी किसी को कुछ नही मिलता।







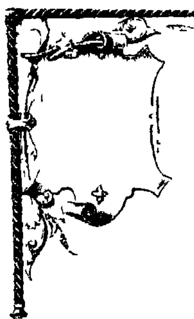
(39)

भगवान महावीर ने कहा–जीवन में यदि कुछ मूल्यवान है, तो वह है–स्वयं का मूल्य। स्वयं के मूल्य से बढ़कर दुनिया मे और कोई मूल्यवान हो ही नहीं सकता। जो उसे पा लेता है, वह सब कुछ पा लेता है। और जो उसे खो देता है, वह सब कुछ खो देता है। मालामाल होने की कसौटी है, स्वयं को पा लेना और कंगाल होने की कसौटी है, स्वयं को खो देना। यदि किसी ने स्वयं को खोकर जगत के सारे ऐश्वर्य-वैभव पा भी लिए तो समझना उसने बड़ा महंगा सौदा किया है, वह हीरे-मोती देकर कंकड़-पत्थर ले आया है।







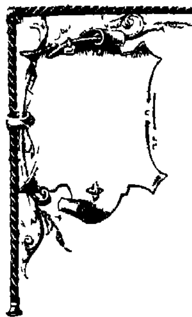



(40)

महावीर से श्रेणिक ने पूछा–भगवन्! मुनि बड़ा है या श्रावक? महावीर अनेकान्त की भाषा में बोले–मुनि बड़ा है मगर एक अपेक्षा से श्रावक मुनि से भी बड़ा है। श्रेणिक ने पूछा–वो कैसे? महावीर ने समझाया–मुनि महाव्रती है, गृह-त्यागी है, अतः मुनि बड़ा है लेकिन 24 घंटों में एक घंटा ऐसा भी आता है जब श्रावक बड़ा हो जाता है। कब? जब मुनि को श्रावक आहार देता है, तो श्रावक का हाथ ऊपर होता है और मुनि का नीचे। उस समय श्रावक मुनि से बड़ा होता है, क्योंकि देनेवाला हमेशा बड़ा होता है। मगर श्रावक को कहीं ये अहंकार न आ जाये कि महाराज! देखा, मैं तुमसे बड़ा हूं, तो महावीर फिर श्रावक के कान पकड़ते और कहते हैं–'अरे नादान, मुनि अब भी बड़ा है क्योंकि मुनि पट्टे पर खड़ा है, और तू नीचे पड़ा है, इसीलिए मुनि अब भी बड़ा है।'





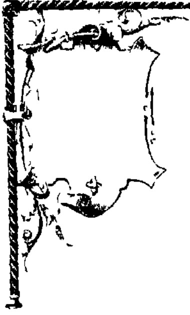




(41)

महावीर के निर्वाण का वक्त था। अंतिम समय देवराज इन्द्र ने भगवान से प्रार्थना की–भंते! अपनी आयु कुछ और बढ़ा लीजिए, संसार को आपका थोड़ा सत्संग और मिल जायेगा। महावीर ने कहा–देवराज! अपनी आयु का एक क्षण भी बढ़ाना संभव नहीं है। मेरा जीवन-लक्ष्य पूर्ण हो चुका है। अब मैं हमेशा-हमेशा के लिए ससार से मुक्त हो रहा हूं। यह कहकर भगवान ने नश्वर शरीर छोड़ दिया और मुक्त हो गए। देवराज ने घोषणा की कि आज कार्तिक कृष्णा अमावस्या को भगवान का निर्वाण हुआ। आज से यह रात्रि दीपों की रात्रि होगी, जाओ घर-घर दीप जलाओ, दीपावली मनाओ।






(42)

वर्धमान महावीर के शिष्यों में बहस चल रही थी कि मनुष्य के अधःपतन का क्या कारण है? किसी ने काम-वासना को कारण बताया तो किसी ने लोभ को और किसी ने अहंकार को। अन्त में वे सभी शका-समाधान कराने महावीर के पास आये। महावीर ने पूछा–पहले यह बताओ कि मेरे पास एक अच्छा-खासा कमण्डल है यदि उसे नदी में छोड़ा जाए तो क्या वह डूबेगा? शिष्यो ने उत्तर दिया–कदापि नहीं। महावीर ने आगे पूछा–और यदि उसमें छिद्र हो जाए तो? शिष्यों ने कहा–तब तो डूबेगा ही। महावीर ने फिर पूछा–यदि छिद्र दायीं ओर हो तो? शिष्यों का उत्तर था–दायीं ओर हो या बायीं ओर, छिद्र कहीं भी हो, पानी उसमें प्रवेश करने पर वह डूबने लगेगा। तब भगवान ने कहा–तो वत्स! जान लो मानव जीवन भी उस कमण्डल के समान है उसमें दुर्गुण रूपी कोई भी छिद्र जहां हुआ बस समझो वह डूबने वाला है।

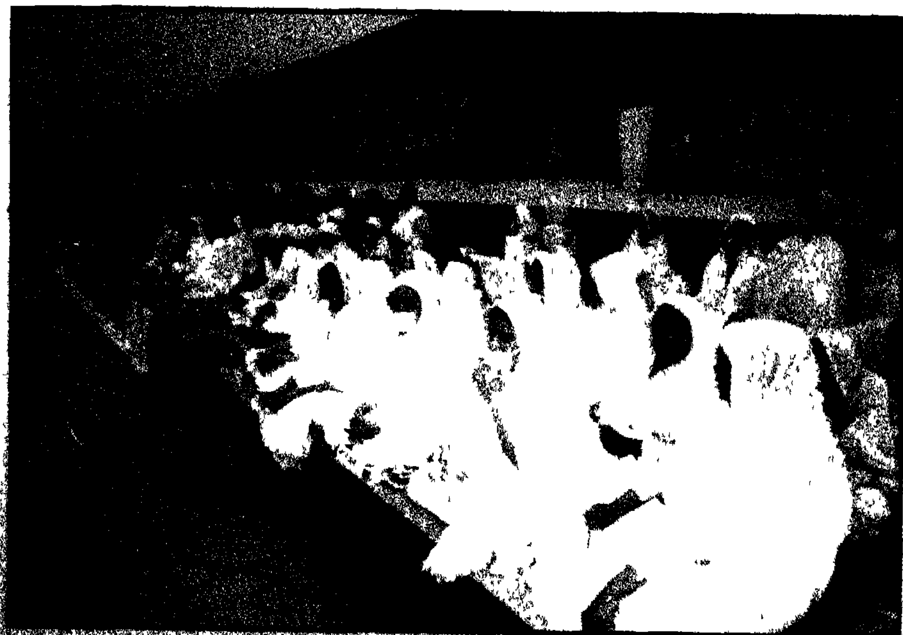





अहिंसा महाकुंभ (1 जनवरी 2000) के



सरकार की हिंसक नीतियों के विरुद्ध क्रांतिकारी संत का आक्रोश





विशाल मंच पर विराजित जैन, वैष्णव परंपरा के शीर्षस्थ शताधिक आचार्य, मुनि, शंकराचार्य, आर्यिकाएं एवं साध्वियां।





'अहिंसा महाकुंभ' में देश भर से आए जन-सैलाब का विहंगम दृश्य।



'अहिंसा महाकुंभ' के विशाल मंच पर विराजमान आदरणीय साधु-संत।



प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी को पूज्यश्री का चित्र भेंट करते हुए कार्यकर्ता।



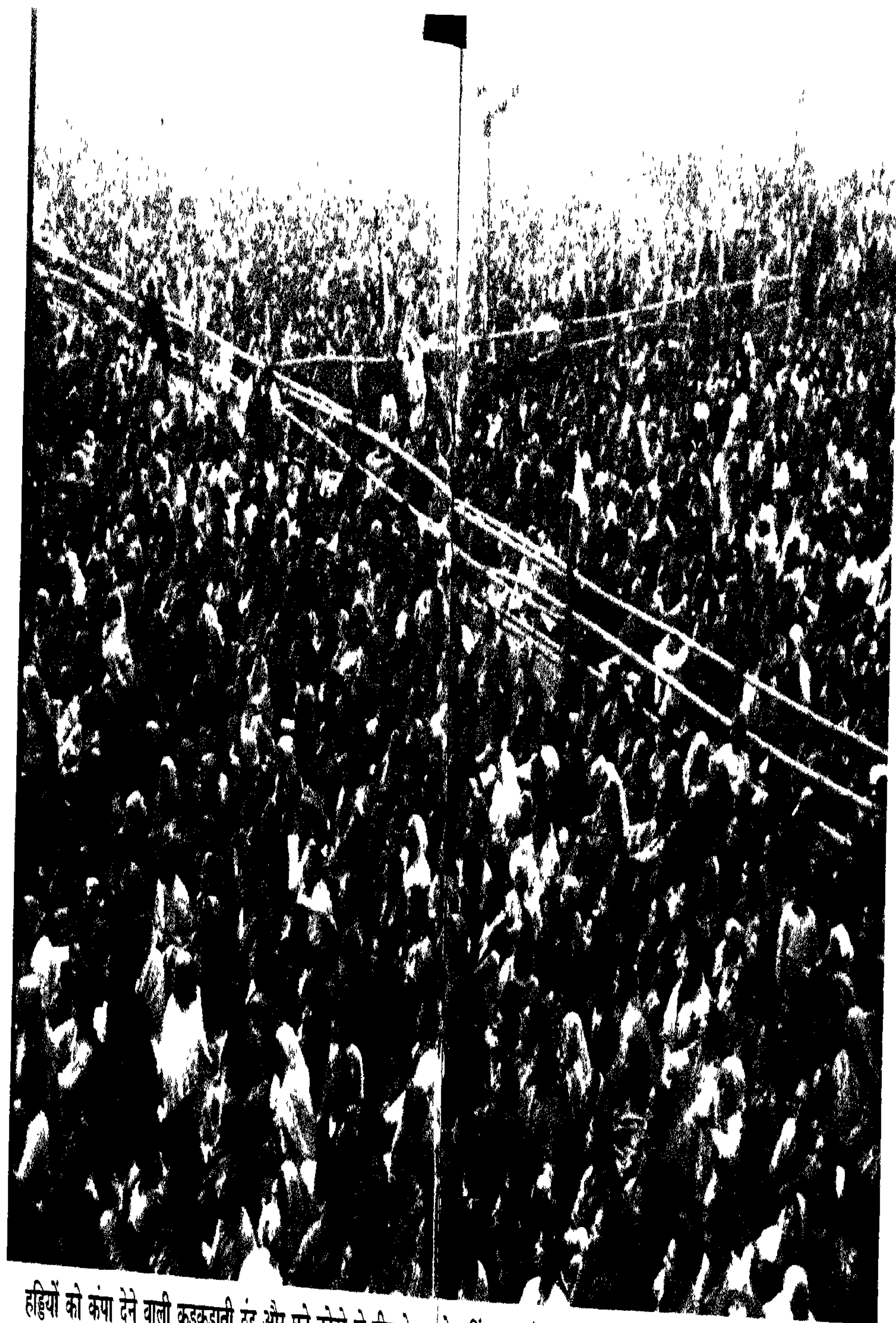
अहिंसा के पुजारी महात्मा गांधी की समाधि राजघाट पर मुनिश्री द्वारा अहिंसा-रैली से पूर्व सम्बोधन।



आचार्यश्री पुष्पदंत सागर जी महाराज से सलाह-मश्विरा करते हुए मुनिश्री।



मंच की ओर बढ़ते हुए कदम

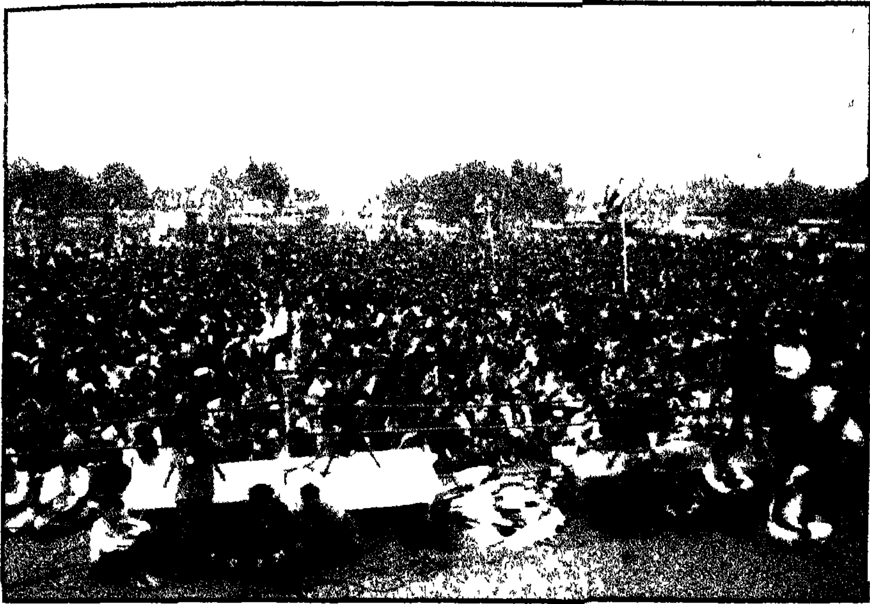


हड्डियों को कंपा देने वाली कड़कड़ाती ठंड और घने कोहरे के बीच देश भर से अहिंसा-महाकुंभ में आए लाखों अहिंसा-प्रेमियों का विशाल जन सैलाब।



मुनिश्री तरुण सागर जी महाराज के आह्वान पर आयोजित 'अहिंसा महाकुंभ' में महिलाओं ने बढ़-चढ़कर शिरकत की। देश भर से आई महिलाएं (ऊपर) और हाथ उठाकर सरकार की आत्मघाती नीतियों का विरोध करती हुई महिलाएं (नीचे)

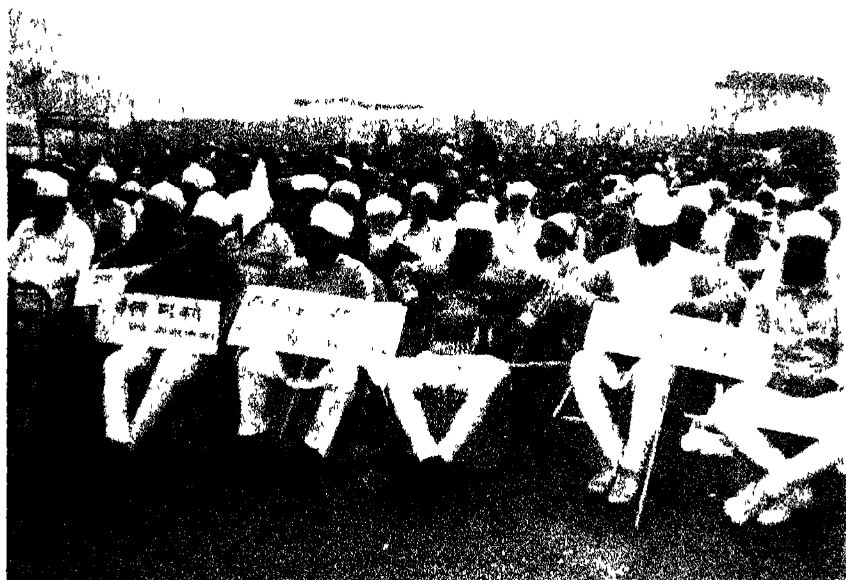




बूचड़खाने और मांस निर्यात बंद करने की मांग को मिला व्यापक जन-समर्थन।



अहिंसा-महाकुंभ में देश-भर से शामिल हुए अहिंसा-प्रेमियों के जत्थे सरकार से बूचड़खाने और मांस निर्यात बंद करने की मांग को लेकर लालकिले की ओर बढ़ते हुए।



ऐतिहासिक 'अहिसा महाकुंभ' मे समाज के सभी वर्गो के लोगो ने वढ-चढकर हिस्सा लिया और सरकार की हिसक नीतियो के खिलाफ विरोध प्रकट किया।



मुनिश्री के आह्वान पर जन-समूह ने हाथ उठाकर पशु-हत्या व हिंसा का विरोध किया।



अहिसा-महाकुभ मे मुख्यमत्री श्रीमती शीला दीक्षित मुनिश्री की जीवन-गाथा 'क्रातिकारी सत' का विमोचन करते हुए।



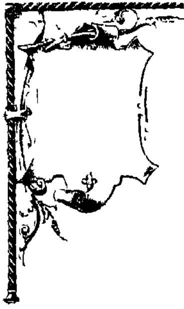
राष्ट्रीय स्वय सेवक सघ के तत्कालीन सरसघ चालक प्रो. राजेन्द्र सिह 'रज्जू भेया' से चर्चा।



गृह मंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी मुनिश्री को श्रीफल भेंट करते हुए।



हिंसा, क्रूरता और सरकार की अमानवीय नीतियों के खिलाफ उमड़े जन-सैलाब को लालकिले से क्रांतिकारी संत का मंगल आशीष।

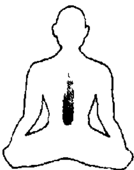




(43)

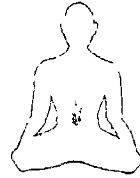
श्रेणिक ने महावीर से पूछा–भंते! मुनि कौन? भगवान बोले–'असुत्ता मुनि' अर्थात जो जागृत है, वह मुनि है, जिसका मन मौन हो गया है, वह मुनि है। भगवान बोले–एक संन्यासी और संसारी में इतना ही तो फर्क होता है कि जिसके पैर दुनिया भर में भटकते रहें लेकिन मन एक जगह टिका रहे, वह संन्यासी है और जिसके पैर एक जगह टिके रहें और मन दुनियाभर में भटकता हो वह संसारी है। श्रेणिक! जो मन को मना ले वह मुनि और मन जिसको मना ले वह संसारी है। मन को साध लेना ही मुनित्व है।











(44)

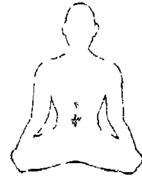
महावीर ने कहा–संसार का कोई प्रारंभ नहीं, लेकिन इसका अत है। मोक्ष का प्रारंभ तो है लेकिन अत नहीं। ससार कब शुरू हुआ, कोई बता सकता है? लेकिन एक घड़ी ऐसी आती है जब इसका अंत हो जाता है। मोक्ष होने पर मोक्ष का अत नही, एक बार मुक्त होने पर पुनः संसार मैं आना नहीं होता। पाप का प्रारंभ नहीं, लेकिन अत है, और पुण्य का प्रारम्भ तो है लेकिन अंत नहीं। जिसका प्रारभ हो पर अत नहीं, उसे अंत तक साधते रहो। 'पुण्य और मोक्ष' मनुष्य का अतिम साध्य है।









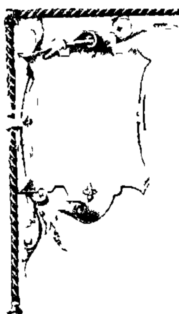


(45)

महावीर को मानने वाला श्रावक नहीं, महावीर को सुनने वाला श्रावक है। श्रावक का अर्थ है जो श्रवण में समर्थ है, जो सुनने की कला में निपुण है, जिसे सुनना आ गया। बोलना ही कला नहीं, महावीर कहते है सुनना भी एक कला है। और जिसे यह कला आ जाती है वही महावीर का शिष्य बन पाता है। श्रावक होना अपने आप में एक कठिन साधना है। भगवान महावीर ने अपने जीवन काल में जिन चार तीर्थो की स्थापना की थी उनमें एक श्रावक-तीर्थ भी था।



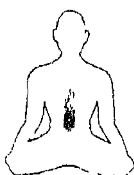


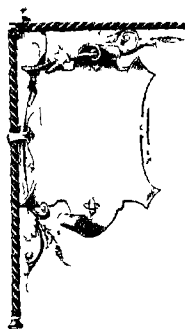



(46)

एक बार किसी ने भगवान महावीर से पूछा–भंते! सोना अच्छा है या जागना अच्छा है। महावीर ने उत्तर दिया–सोना भी अच्छा है और जागना भी अच्छा है। महावीर तो अनेकान्त की भाषा बोलते थे ना। जिज्ञासु ने फिर पूछा–भगवान श्री, अच्छा तो कोई एक ही होगा, दोनों अच्छे कैसे हो सकते हैं? भगवान ने कहा–पापी मनुष्य का सोना अच्छा है और धर्मात्मा मनुष्य का जागना अच्छा है। पापी के सोने में ही दुनिया का भला है और संत-पुरुषो के जागने में ही दुनिया का कल्याण है। पापी जागेगा तो जागते ही दुष्कर्म करेगा। सत जागेगा तो ससार की भलाई के लिए सत्कर्म करेगा। अत: पापी को जागने मत देना और साधु को सोने मत देना।





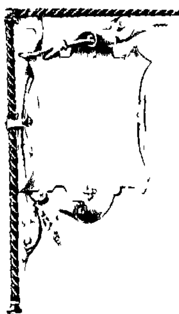




(47)

एक बार भगवान के प्रिय शिष्य इन्द्रभूति गौतम ने पूछा–भगवान! एक व्यक्ति दिन-रात आपकी भक्ति में लीन रहता है इसीलिए उसे दुखियों की सेवा के लिए समय नहीं मिलता और दूसरा व्यक्ति दुखियों की सेवा में इतना तन्मय रहता है कि उसे आपकी पूजा-भक्ति, यहां तक कि दर्शन करने तक का समय नही मिलता। भंते! दोनो में कौन श्रेष्ठ है? कौन आपके आशीर्वाद का पात्र है? भगवान ने उत्तर दिया–गौतम! जो दीन दुखियों की सेवा कर रहा है वही श्रेष्ठ है, वही मेरे आशीर्वाद का पात्र है। गौतम ने विस्मय से पूछा–भंते! दुखियों की सेवा की अपेक्षा आपकी पूजा का अधिक महत्त्व होना चाहिए। महावीर बोले–मेरी सबसे बड़ी पूजा मेरी आज्ञा का पालन है। और मेरी आज्ञा यही है कि दुखियों की सेवा करो। सेवा ही धर्म का मूल है।







(48)

महावीर ने कहा–केवल सिर मुडा लेने से कोई श्रमण नही होता, ओकार का जाप करने से कोई ब्राह्मण नही होता, जगल मे वास करने से कोई मुनि नही होता तथा कुश-वस्त्र ग्रहण करने से कोई तपस्वी नही होता। राजा श्रेणिक ने पूछा–भते! तो फिर कैसे होता है? भगवान ने कहा–समता से ही श्रमण होता है, ब्रह्मचर्य से ही ब्राह्मण होता है, ज्ञान से ही मुनि होता है और तप से ही तपस्वी होता है। बाहर मे कोई भी भेष ओढ लिया और यदि भीतर मे मोह की ग्रन्थिया नही टूटी तो सब व्यर्थ है। अतरंग शुद्धि के बिना केवल बाह्य आचरण मोक्ष का कारण नही है।





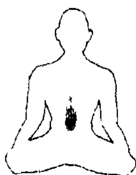


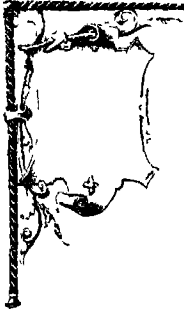



(49)

महावीर की वाणी है–जो रात और दिन एक बार अतीत की ओर चले जाते हैं वे फिर कभी वापस नहीं लौटते। जो मनुष्य अधर्म करता है उसके वे दिन-रात बिल्कुल निष्फल जाते हैं। लेकिन जो मनुष्य धर्म करता है उसके वे रात-दिन सफल हो जाते है। इसीलिए जबतक बुढापा नही सताता, जब तक व्याधियां नही बढ़तीं, जब तक इन्द्रिया अशक्त नही होतीं तब तक धर्म का आचरण कर लेना चाहिए। बाद मे कुछ नहीं होगा।





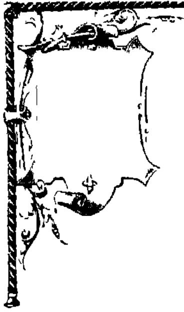



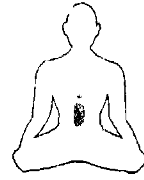

(50)

दो मित्र बातें कर रहे थे। एक बोला–कैसा कलिकाल है, चारों तरफ अंधेरा ही अंधेरा है। दो काली रातो के बीच केवल एक उजला दिन आता है। तभी दूसरे मित्र ने कहा–नहीं, ऐसी तो कोई बात नहीं है, मुझे तो चारों तरफ प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है। दो उजले दिनों के बीच केवल एक ही अंधेरी रात आती है। महावीर कहते हैं–स्थिति एक ही है लेकिन दोनों के देखने का नजरिया अलग-अलग है। जो सम्यग्दृष्टि है वह एक अंधेरी रात के बीच दो उजले दिन देख लेता है और जो मिथ्यादृष्टि है उसे दो अंधेरी रातो मे केवल एक उजला दिन दिखता है। जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि।







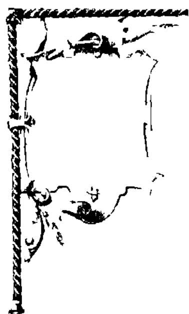
(51)

महावीर कहते हैं–दीक्षा दूसरा जन्म है। द्विज का अर्थ है नया जन्म, जिसने दूसरा जन्म भी इसी जन्म में पा लिया। एक जन्म तो मां के पेट से होता है वह तो कोई खास नहीं है, क्योंकि वह तो सभी का होता है। लेकिन जो दूसरा जन्म है वह बेहद महत्वपूर्ण है। वही असली जन्म है, क्योंकि उस जन्म में अपना दीया जल चुका होता है और फिर वह दूसरों के बुझे दीयों को भी जला सकता है। महावीर कहते हैं–जिसका खुद का दीया बुझा हो वह दूसरों के दीयों को कैसे जला सकता है। तो द्विज वह है जो अपना और दूसरे का उद्धार करने मे समर्थ है।











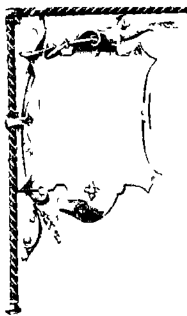
(52)

एक दिन मा त्रिशला श्रृंगार कर रही थीं। अपने केशों को संवारा और उसमे एक फूल लगा लिया। फिर वर्धमान से पूछा–बेटा! आज मै कैसी लग रही हू। वर्धमान ने मां को देखा और एकदम गंभीर हो गये। बोले–मा' एक बात बताओ, अगर किसी को मेरा चेहरा सुदर लगे और वह मेरी गर्दन काट कर अपने घर मे सजा कर रख ले तो तुम्हें कैसा लगेगा? त्रिशला ने कहा–बेटा! तू क्या कह रहा है। वर्धमान ने कहा–हा मा' मै ठीक कह रहा हूं। पौधे से फूल तोड़कर तुमने भी तो यही किया है। जरा जाकर देखो उस पौधे को, फूल तोड़ने पर उसे कितना दु:ख हो रहा है। मां अपना सौंदर्य बढ़ाने के लिए किसी के जीवन को उजाड देना क्या उचित है? ऐसे थे वचपन मे महावीर।





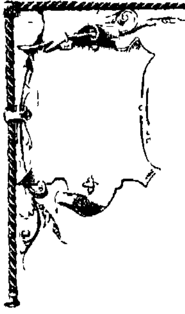





(53)

एक चोर था—रोहिणेय। उसके पिता ने मरते वक्त रोहिणेय से वचन लिया कि वह कभी महावीर के पास न जाये, उनका उपदेश न सुने। एक दिन महावीर का उपदेश चल रहा था। राहिणेय का उधर से निकलना हुआ तो वह कानों में अंगुली डालकर भागा। पैर मे कांटा लग गया। कांटा निकालने लगा तो उसके कानो मे महावीर के कुछ शब्द पड़ गये। महावीर कह रहे थे—देवी-देवताओ की पलक नहीं झपकती, उनकी परछाई नहीं पड़ती। कालान्तर मे उसके जीवन मे एक ऐसी घटना घटी कि महावीर के इन शब्दो से वह मृत्युदंड से बच गया। बाद मे वह महावीर का यह सोचकर परम भक्त बन गया कि दो शब्द से मृत्युदंड से बच गया अगर महावीर को पूरा सुनूंगा तो संसार-चक्र से ही बच जाऊंगा।

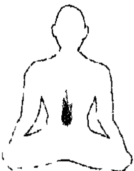


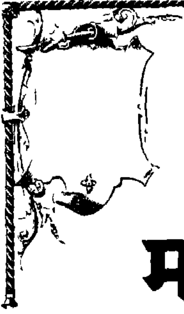




(54)

महावीर ने अपने साधना-काल में खूब उपसर्ग झेले, परिषह सहे। एक बार महावीर एक टीले पर ध्यानमग्न खड़े थे। कुछ उद्दण्ड लड़के वहा आकर महावीर को परेशान करने लगे, उन्हे हिलाने-डुलाने लगे। जब महावीर कुछ न बोले तो उन्होंने धक्का देकर महावीर को टीले से नीचे गिरा दिया। महावीर लुढ़कते हुए टीले से नीचे पहुंच गये, मगर वहा पर भी वैसे ही पड़े रहे, जबतक कि उनका ध्यान पूरा नहीं हुआ। ध्यान पूरा होने पर वे उठे और बगैर किसी से कुछ कहे शात-भाव से आगे बढ गये।






(55)

महावीर किसी गांव से गुजरते थे। गाव के लोग महावीर के प्रति क्रोधित थे। वे महावीर को गालियां देने लगे। जब वे गालियां दे चुके तो महावीर ने कहा–मित्रों! अगर तुम्हारी बात पूरी हो गई हो तो मैं जाऊं, मुझे अगले गांव जल्दी पहुंचना है। लोग हैरान थे। उन्होंने पूछा–हमने तुम्हें गालियां दीं, क्या तुम्हें बुरा नहीं लगा? महावीर ने कहा–आजकल मैंने गालियां लेना बद कर दिया है। और जब तक मै लूं न, तो बुरा क्यों लगेगा। अच्छा, अब मै चलता हूं। जाते-जाते महावीर ने कहा–एक बात और बताऊं, पिछले गांव मे कुछ लोग मिठाइयां लेकर आये थे, मगर मैंने लेने से इंकार कर दिया और वे मिठाइयां वापस ले गये। क्या तुम बता सकते हो कि उन्होंने मिठाई का क्या किया होगा? भीड़ में से कोई बोला–अरे! घर जाकर आपस में बांट-खा ली होगी। भगवान बोले–मुझे यही तो चिंता हो रही है। उन्होंने तो मिठाई बाट-खा ली होगी। मगर तुम इन गालियों का घर जाकर क्या करोगे? क्या तुम इन्हे आपस में बांट सकोगे? और क्या कोई लेने को तैयार भी होगा? महावीर की यह बात सुनकर वे सभी भगवान के चरणों में झुक गए।





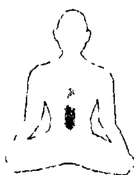




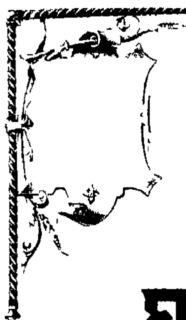

(56)

श्रेणिक ने महावीर से पूछा–भगवन्! हम किसके प्रकाश मे जिए? महावीर ने कहा–सूरज के प्रकाश में जिओ। श्रेणिक ने पुन: पूछा–अगर सूरज न निकला हो तो? अर्हत् ने उत्तर दिया–तो फिर चन्द्रमा के प्रकाश मे जिओ। पुनः पूछा गया–और अगर अमावस की रात हो और चांद भी न निकले तो किसके प्रकाश में जिएं? भगवान ने कहा–दीपक के प्रकाश में जिओ। श्रेणिक ने एक बार फिर पूछा–और यदि दीपक भी उपलब्ध न हो तो? महावीर बोले–शास्त्रो के शब्दों के प्रकाश में, सद्‌गुरु के ज्ञान के प्रकाश में जिओ। श्रेणिक ने आखिरी बार फिर पूछा–और कदाचित वह भी सभव न हो तो? भगवान ने फरमाया–तब स्वयं की आत्मा के प्रकाश मे जिओ। 'अप्प दीपो भव' अपने दीपक खुद बनो।





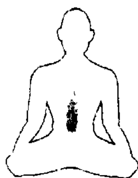


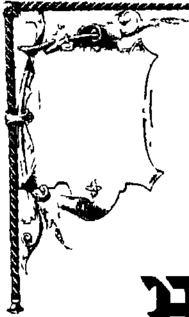



(57)

घटना तब की है जब महावीर मां के गर्भ मे थे। एक दिन उन्होंने सोचा–मेरे हलन-चलन से मां को कष्ट होता होगा। अतः मा को कष्ट न हो, इसलिए वे हलन-चलन बद करके स्थिर हो गए। इधर गर्भ की खुशियां मनाई जा रही थीं, मगल-गीत गाये जा रहे थे, पर ज्यों ही गर्भ का हलन-चलन बंद हुआ तो मा त्रिशला चिन्तित हो गई, विलाप करने लगी। गीत रुक गये, बाजे थम गए। हर्ष की जगह शोक छा गया। मां का रोना गर्भस्थ महावीर ने सुना तो सोचा, यह तो उल्टा हो गया। मैने तो मां के सुख के लिए हिलना-डुलना बद कर दिया था, लेकिन यहा तो कोहराम मच गया। और भगवान ने पुन. हिलना-डुलना प्रारंभ कर दिया। फिर क्या था' मा के चेहरे पर खुशिया उभर आई और फिर से उत्सव शुरू हो गया, गीतो की गुंजार गूंज उठी और जब महावीर ने जन्म लिया तो उनका जन्मोत्सव कुण्डलपुर वासियों ने ही नहीं बल्कि स्वर्ग से आकर देव-इन्द्रो ने भी मनाया था।






(58)

भगवान महावीर से उनके एक शिष्य ने पूछा–'भगवन्! चट्टान से अधिक शक्तिशाली क्या होता है?'

'लोहा, वह चट्टान को भी तोड देता है।' महावीर ने उत्तर दिया।

'भगवन्! लोहे से अधिक शक्ति किसमें है?'

'अग्नि में, वह लोहे को भी पिघला देती है।' भगवान बोले।

'क्या अग्नि से भी अधिक बल किसी में होता है?' शिष्य ने आगे पूछा।

'हा पानी में, वह अग्नि को बुझा देता है।' उत्तर मिला।

'प्रभु! कृपया बताएं कि पानी से अधिक क्षमता किसमें है?'

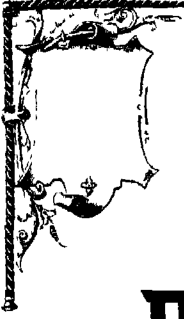
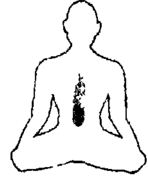
'संकल्प में। इससे अधिक शक्ति किसी में नही है।' भगवान ने कहा।

शिष्य ने महावीर के चरणों का स्पर्श करते हुए कहा, 'बस भगवन्! मुझे वही शक्ति प्राप्त करनी है।

महावीर ने हाथ उठाया और कहा–'तथास्तु।'



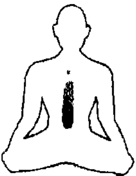


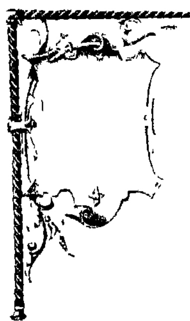




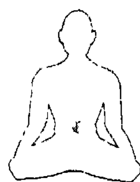
(59)

महावीर की मुक्ति का क्षण निकट था। उन्होंने अपने प्रिय शिष्य गौतम को एक ब्राह्मण को प्रतिबोध देने के लिए दूर भेज दिया। वहां पर राहगीर ने गौतम को महावीर के निर्वाण की खबर दी। भगवान के निर्वाण की खबर सुनते ही गौतम विषादग्रस्त हो गए। मोह के वशीभूत होकर विलाप करने लगे। गौतम ने राहगीर से पूछा–मोक्ष जाते समय भगवान ने मेरे लिए कोई संदेश तो दिया होगा? राहगीर ने कहा–हां दिया है, भगवान ने कहा : 'संयम गोयम मा पमायए'। अर्थात्–हे गौतम! एक क्षण को भी प्रमाद मत कर। भगवान ने कहा–हे गौतम! तुम समुद्र लांघ चुके हो, किनारे पर आ गये हो, अब किनारे को क्यों पकड़कर बैठे हो, इसे भी छोड़ दो। मेरे प्रति तुम्हारे मन में जो मोह है, उसे भी छोड़ दो।' गौतम ने प्रभु का संदेश सुना तो उनकी आत्मा से मोह का आवरण तत्क्षण हट गया और उन्हें उसी समय कैवल्य की प्राप्ति हो गई।



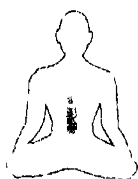


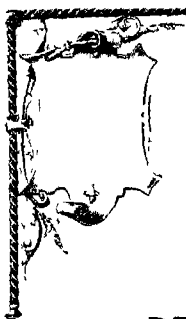


(60)

महावीर ने अनेकान्त को समझाने के लिए एक दिन हाथी और छह अंधों का उदाहरण दिया और कहा जिस अंधे के हाथ में हाथी की जो चीज लगी उसने उसी को (उस जैसा ही) हाथी मान लिया। जिसके हाथ हाथी की पूंछ लगी, वह बोला–हाथी रस्से जैसा है। जिसे पांव हाथ लगा उसने कहा–हाथी खंभे जैसा है। जिसे सूड हाथ लगी वह अजगर जैसा और जिसे कान हाथ लगे वह पंखे जैसा हाथी को मान बैठा। महावीर ने कहा–हाथी सत्य का प्रतीक हे और अंधापन दुराग्रह का। अनेकान्त वह ज्ञान नेत्र है, जिसके खुलते ही सम्पूर्ण हाथी का दर्शन होने लगता है और आग्रह-दुराग्रह की अकड छूट जाती है। महावीर-वाणी है . मतभेद और पथ-भेद होने के बावजूद भी दूसरो के विचारों को सुनने, उन्हे समझने और उसमें निहित सत्य को स्वीकार करने का साहस रखना चाहिए। सत्य कहीं से भी मिले उसे बेहिचक ले लो।







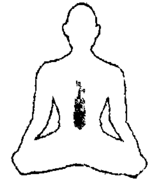

(61)

भगवान महावीर ने दिन के बारह बजे गृह-त्याग किया तो उधर महात्मा बुद्ध ने रात के बारह बजे घर छोड़कर संन्यास लिया। राम का जन्म दिन के बारह बजे हुआ तो श्रीकृष्ण का जन्म रात के बारह बजे। बारह का आंकड़ा चारों महापुरुषों के साथ है। दरअसल यह प्रतीक है। दिन के 12 बजे व्यक्ति को पेट की भूख सताती है तो रात के 12 बजे उसे काम की भूख पीड़ित करती है। राम और कृष्ण का 12 बजे जन्म लेना इस बात का सकेत है कि जब पेट की भूख सताये तब और जब काम की भूख सताये तब व्यक्ति को भगवत्-नाम स्मरण करके अपने मन को काबू में रखना चाहिए। महावीर और बुद्ध का 12 बजे घर छोडना यह सकेत देता है कि 'जब जागो तभी सवेरा'। दरअसल रात कभी होती ही नहीं है और अगर होती भी है तो हमारी वजह से। रात तभी तक है जब तक कि आंखे बद है। सुबह हर पल है–बस आंख खोलने की देर है। महावीर कहते है–जागरण और मरण का कोई मुहूर्त नहीं होता।





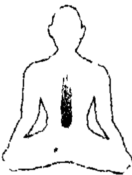


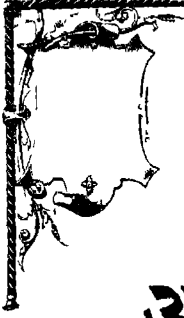
(62)

भगवान महावीर गहरे ध्यान की मुद्रा में बैठे थे। उनकी आंखें बंद थीं। चारों ओर एक अद्भुत शांति फैली हुई थी। एक नन्हीं-सी चिड़िया उड़ती हुई वहा आई और फुदकती हुई भगवान महावीर के पास आ बैठी। जब भगवान ने आंखें खोलीं तो उस स्पदन से नन्हीं चिड़िया डर गई। वह उड़कर भाग गई। महावीर स्वामी ने सोचा कि मनुष्य की आंखें खोलने की क्रिया में भी हिंसा अन्तर्निहित है। भगवान महावीर अहिंसा के अवतार ही नहीं, बल्कि अहिंसा ही थे। अहिंसा को उन्होंने अनेक आयामों से देखा और अनुभव किया। चलते-फिरते प्राणियों में तो जीवन सभी देख लेते हैं लेकिन महावीर ऐसे अहिंसा-पुरुष थे जिन्होंने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और वनस्पति तक में जीवन देखा और अपने को उनके समकक्ष रखा।










(63)

आज जैन समाज के सामने अपने को शाकाहारी बनाये रखने की सबसे बड़ी चुनौती है। भगवान महावीर के मोक्ष जाने के पश्चात इन ढाई हजार वर्षो में जैन समाज कई बार बंटा है और वह बंटवारा कभी दिगम्बर जैन और श्वेताम्बर जैन के नाम से हुआ है तो कभी तेरापंथी जैन और बीसपंथी जैन के नाम से, कभी मूर्तिपूजक जैन और स्थानकवासी जैन के नाम से हुआ तो कभी मुनिभक्त और सोनगढ़ी के नाम से हुआ है। मगर अब जो बंटवारा होगा वह दिगम्बर और श्वेताम्बर, तेरापंथी और बीसपंथी, स्थानकवासी और मंदिरमार्गी के नाम से नही बल्कि शाकाहारी जैन और मांसाहारी जैन के नाम से होगा। अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें और तुम्हारी आने वाली पीढ़ियों को वह अभागा दिन न देखना पड़े तो अपने को और अपनी नई पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति के चंगुल से बचाएं तथा उनमें भारतीय मूल्यों, आदर्शो और जैनत्व की चमक जागृत करें।





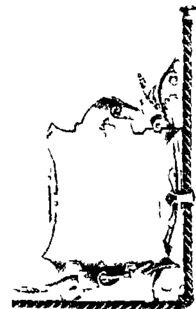


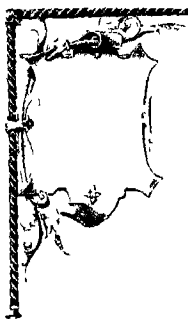


(64)

महावीर ने तप से ज्यादा महत्व ध्यान को दिया। महावीर ने कहा—दो दिन का उपवास दो मिनट के ध्यान की बराबरी नहीं कर सकता। सम्राट श्रेणिक का मन स्थिर नहीं था। वे शांति चाहते थे। उन्होंने महावीर के समक्ष अपनी समस्या रखी। महावीर ने कहा—जाओ पूनिया श्रावक से 'सामायिक' ले लो। राजा के पास कमी किस बात की' जो मांगेगा दूगा, पर सामायिक तो मिल जाएगी, मानो सामायिक कोई पदार्थ हो। पूनिया बेचारा था गरीब श्रावक। पूनिया बनाकर आजीविका चलाता था। राजा ने जाकर अपनी वात कही, मगर राजा श्रेणिक की विपुल धनराशि भी उसकी शांति के आगे नगण्य हो गई। सम्राट का अहं गल गया। शांति खरीदी और वेची नहीं जाती।



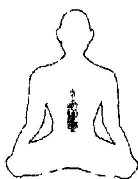




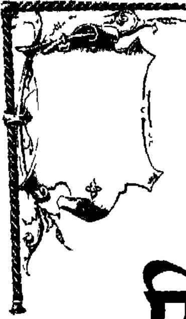
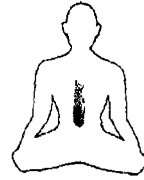
(65)

महावीर विराट व्यक्तित्व के धनी हैं, महावीर की मा त्रिशला ने जो 16 स्वप्न देखे थे, वे उनके महान व्यक्तित्व को दर्शाते हैं। स्वप्नों में मा ने हाथी, सिंह और वृषभ देखा। सूर्य और चन्द्र, फूलकाय और निर्धूम आग, सिंहासन और लक्ष्मी को देखा। दरअसल ये स्वप्न दर्शाते हैं कि उनका व्यक्तित्व एक ओर जहां कुसुम-सा कोमल था, वहीं अग्नि की तरह जाज्वल्यमान भी था। चन्द्र की तरह शीतल और सूर्य की भाति तेजस्वी भी था। गज की तरह बलिष्ठ था तो वृषभ की तरह कर्मठ था और सिंह की तरह साहसी। सिंहासन इस बात का प्रतीक है कि वे दुनिया के दिलो पर राज करेगे तथा लक्ष्मी उनके चरणों की दासी होगी। चैत्र शुक्ल त्रयोदशी को जब महावीर ने जन्म लिया तो जनता ने उसी दिन उनका जन्मोत्सव मनाकर महावीर को अपना तीर्थंकर मान लिया था।





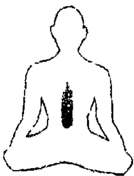


(66)

सिद्धार्थ के राज-प्रासाद का नाम 'नद्यावर्त' था। नद्यावर्त सात-मंजिला था। वर्द्धमान तीसरी मंजिल पर खेल रहे थे। मां त्रिशला सबसे नीचे थीं। वर्द्धमान के मित्र आए और मां से पूछा कि वर्द्धमान कहा है। मां ने कहा--ऊपर है। बच्चे दौड़कर सातवीं मंजिल पर पहुंच जाते हैं। वहां पिता सिद्धार्थ मौजूद थे। मित्रों ने उनसे पूछा--वर्द्धमान कहां है? उत्तर मिला--नीचे। बच्चे थक चुके थे। अब उन्होंने एक-एक मंजिल पर वर्द्धमान को खोजना शुरू किया। तीसरी मंजिल पर मुलाकात हो गई। दोस्तों ने वर्द्धमान से शिकायत की कि तुम्हारे माता-पिता झूठ बोलते हैं। मां कहती है तुम ऊपर हो, पिता कहते है नीचे हो। वर्द्धमान ने कहा--नहीं, माता-पिता दोनों सच्चे हैं। मित्रों ने पूछा--वो कैसे? वर्द्धमान ने समझाया-- मां पहली मंजिल पर है। मां की अपेक्षा मैं ऊपर हूं। पिता सातवीं मंजिल पर हैं, उनकी अपेक्षा मै नीचे हू। इस तरह मा भी सच्ची हैं, पिता भी सच्चे हैं और तुम भी सच्चे हो। यह थी महावीर की अनेकान्त दृष्टि जो उन्हें बचपन से ही उपलब्ध थी।






तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी के जीवन वृत्त का संक्षिप्त तथ्यपरक प्रस्तुतिकरण

शुभ नाम	1008 श्री महावीर स्वामी
पूर्व भव	अच्युत स्वर्ग के पुष्पोत्तर विमान मे द्वादशाग के ग्यारह अगो के ज्ञानी।
विशिष्ट विशेषण	चरम तीर्थंकर।
तीर्थंकर क्रम	चतुर्विंशतम्।
पूर्व तीर्थंकर	. 'ऋषभादि-पार्श्वनाथ' पर्यत 23 तीर्थंकर
पूर्व तीर्थंकर से अन्तर	23वे तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण के 178 वर्ष पश्चात वीर प्रभु का जन्म हुआ।
दादा	: राजा सर्वार्थ। दादी . श्रीमती सुप्रभा दोनो प्रभु के समय मे विद्यमान थे।
पिता	नाथ वश के भूपाल शिरोमणि, तीन ज्ञान के धारी एव तीनो सिद्धियो से सम्पन्न, कुराडग्राम पुरस्वामी, राजा सिद्धार्थ।
माता	राजा चेटक ज्येष्ठ पुत्री, त्रिशला/प्रियकारिणी।
फूफा	राजा जितशत्रु।
नाना	'विदेह' देश स्थित भारत के प्राचीनतम उज्ज्वल गणराज्य 'लिच्छवि' गणतन्त्र के प्रमुख क्षत्रिय राजा चेटक थे।
नानी	रानी सुभद्रा।
मावसी (मौसी)	छ –मृगावती, सुप्रभा, प्रभावती, चेलना, ज्येष्ठा और चन्दना।
मामा	दस–सिहभद्र, धनदत्त, धनभद्र, उपेन्द्र, सुदत्त, सुकम्भोज, अकम्पन, पतगक, प्रभञ्जन और प्रभास।
राजप्रासाद	सात मजिला 'नद्यावर्त' नामक राजभवन।
कल्याणक	पाच–गर्भ, जन्म, तप, केवलज्ञान और मोक्ष।
गर्भावतरण से पूर्व माता की सेवा सुश्रुषा	गर्भावतरण से छ मास पूर्व सुरपति इन्द्र की आज्ञा से आठ दिक्कुमारियो द्वारा माता की सेवा सुश्रुषा सम्पन्न की गई थी।
रत्न वर्षा	गर्भावतरण से छ मास पूर्व से लेकर प्रभु के जन्म होने तक सौधर्मेन्द्र की आज्ञा से कुबेर द्वारा महाराज सिद्धार्थ के गृह प्रागण मे प्रतिदिन तीन बार साढ़े तीन करोड रत्नो की वृष्टि की जाती थी।
माता के स्वप्न	गर्भावतरण से पूर्व माता रात्रि के 'मनोहर' नामक चौथे प्रहर के अन्त मे कुछ खुली सी नीद मे सोलह स्वप्न (क्योकि प्रभु ने पूर्व भव मे सोलह कारण भावनाओ का चिन्तवन करके तीर्थंकर प्रकृति का बन्ध किया था) देखती है।

गर्भावतरण	599 ई.पू काल 'सवत्सर' मे आषढ शुक्ल षष्ठी, शुक्रवार, 17 जून को, जिस समय चन्द्रमा 'उत्तराषाढा' नक्षत्र में था।
गर्भकाल	9 मास 7 दिन एव 12 घन्टे।
गर्भकाल में माता व बाल तीर्थंकर की सेवा सुश्रुषा	श्री, ही, घृति, कृति, बुद्धि, लक्ष्मी, शाति और पुष्टि ये आठ प्रमुख देविया अन्य देवियों व छप्पन कुमारी देवियो के साथ निरतर सेवा-सुश्रुषा किया करती थी।
माता की निरनियुक्त परिचारिका	प्रियम्वदा ।
गर्भकल्याणक की मागलिक क्रियाए	प्रभु के प्रति किए गए अनुराग और भक्ति से सचित पुण्य विशेष के कारण केवल एक भवावतारिणी सौधर्मेन्द्र की इन्द्राणी शचि द्वारा सम्पन्न की जाती है।
क्षयिक सम्यग्दृष्टि	प्रभुपूर्व भव से क्षायिक सम्यग्दर्शन को प्राप्त है।
कितने इन्द्रों से पूज्य	शत धर्मेन्द्रो द्वारा पूजनीय।
कुल	ज्ञातृ (नाथ, नाक इति पालि)
जाति	लच्छिवि
वश	इक्ष्वाकु
गोत्र	काश्यप
धर्म	अर्हत
जन्म	आज से लगभग 2600 वर्ष पूर्व ई पू 598 सिद्धार्थी सवत्सर की चेत्र शुक्ल त्रयोदशी, 27 मार्च दिन सोमवार को चन्द्रोत्तरा-फाल्गुनि नक्षत्र मे यमणि (अयर्मा) नामक योग मे एव शुभ लग्न मे। (ज्योतिष विज्ञान क अनुसार ऐसा उत्तम योग 10 कोडा कोडी सागरोपम मे केवल 24 बार ही (24 तीर्थकरो के जन्म के समय) आता है।) उस समय 12 करोड़ विभिन्न प्रकार के सगीत के वाद्य यत्र स्वय ही वादित हा रहे थे।
जन्म स्थान	'वैशाली' गणतत्र के क्षत्रिय कुण्डग्राम कुण्डपुर/कुण्डलपुर नामक मनोहर नगर से।
जन्म महादशा	वृहस्पति।
जन्म दशा	शनि।
अर्न्तदशा	बुध।
राशि	कन्या।
वर्ण (कान्ति)	तपाये हुए स्वर्ण के समान आभायुक्त (हेमवर्ण)।

11
10 मगल केतु
9
12
8
1 सूर्य बुध
7 शनि
2 शुक्र
3
राहु
4 बृहस्पति
6 चन्द्रमा
5

रक्त वर्ण	दुग्ध के समान उज्ज्वल।
संहनन	'वज्र वृषभनाराच संहनन'
सस्थान	'समचतुरस्त्र संस्थान'
जन्म से तीन ज्ञान के धारी	सुमति ज्ञान, सुश्रुत ज्ञान एव सुअवधि ज्ञान।
शरीर की विशेषताएं	श्री वृक्ष, शख, कमल, स्वास्तिक, अकुश, तोरण, चामर, छत्रादि 108 शुभलक्षणो से अकित और मसूरिकादि 100 उत्तम व्यजनो से विद्यमान, मद-स्वेद दोष, रागादिक तथा वातादिक तीनो दोषो से उत्पन्न समस्त रोगो से पूर्णत· रहित, नीहार रहित, छाया रहित, दिव्य, औदारिक, तीनो लोको मे (सर्वश्रेष्ठ परमाणुओ द्वारा निर्मित) सर्वाधिक सुन्दर, अदभुत शरीर।
ऋद्धिया	64 ऋद्धियो के स्वामी।
शरीर पर आभरण	शेखरादि श्रीगध पर्यत षोडश आभरण
वस्त्राभूषणादि योग सामग्री	प्रभु, जन्म से लेकर दीक्षा पर्यत, नित्यप्रति इन्द्र द्वारा स्वर्गों से लाई गई उत्तमोत्तम वस्त्राभूषण, आहारादि समस्त योग सामग्री का उपयोग करते है।
जन्माभिषेक महोत्सव	'ऐरावत' हाथी पर गोद मे बिठाकर इन्द्राणी 'शचि', 'सौधर्मेन्द्र' के साथ असख्य इन्द्रो सहित, 'सुमेरु' पर्वत के 'पाण्डुक' वन की चन्द्रमा के समान सुशोभित, विशाल, आठ योजन मोटी पाण्डु शिला पर, वैडुर्यमणि के समान वर्ण वाले सिहासन पर विराजमान करके, मोतियो की मालाओ से अलकृत, नील कमलो द्वारा आच्छादित मुखो वाले स्वर्णमयी, दैदीप्यमान 1008 कलशो (प्रति कलश 12 योजन प्रमाण) से चन्दन युक्त, त्रस जीवो से रहित, क्षीरोदधि के दुग्ध के समान श्वत, शुद्ध, निर्मल जल द्वारा जन्माभिषेक महोत्सव सानन्द सम्पन्न कराती है।
जन्म महोत्सव	जन्माभिषेक उपरान्त इन्द्राणी 'शचि' द्वारा प्रभु को पहनाये गए वस्त्राभूषण द्वारा सुसज्जित भगवान को राजा सिद्धार्थ के राजप्रासाद मे लाकर जब सौधर्मेन्द्र की दोनों नेत्रो से टिमकार रहित एकटक देखकर भी तृप्ति नही होती तो वह 1008 नेत्र बनाकर प्रभु को एकटक निहारता है और 'आनन्द' नामक नाटक द्वारा अपने मन के हर्ष के उद्‌गारो को व्यक्त करते हुए एक हजार हाथ और 1000 नेत्र बनाकर अद्‌भुत ताण्डव नृत्य द्वारा जन्माभिषेक का पूरा दृश्य साकार कर दिखाता है।
चिह्न/लांछन	सिह
नाम	अनन्त गुणो के विद्यमान होने से वीर प्रभु के अनन्त नाम है। इन्द्र, सहस्र अष्ट नामो से वीर प्रभु की भक्ति अर्चना करता है। अन्य

कुछ नाम भी जैसे—'रगातपुत्त, ज्ञातृपुत्र, नाथवशी, ज्ञानपुत्त, नाथकुलनन्दन, नातपुत्त, न्यायमुनि, विदेह दिन्न, विदेह, वैदेहिक, श्रमण, महामानी, माहण, महति महावीर, महामान्य, महामाहन, निर्ग्रंथ, निगठ, निग्गण्हनात पुत्र, अर्हत, अर्हम, वैशालिक, वसुधैव-बाधव, आकेवलोदयान्मौनी' आदि जग मे काफी प्रचलित है।

प्रसिद्ध नाम	पाच—'वीर', 'वर्द्धमान', 'सन्मति', 'महावीर' और 'अतिवीर'।
बालपने में देव द्वारा बल परीक्षण	'सगम' नामक देव द्वारा।
बालपने में तात्विक जिज्ञासाओं का निराकरण	'सजय' व 'विजय' नामक दो चारण ऋद्धिधारी मुनिवर प्रभु के दर्शन मात्र से ही नि शल्य हो गए थे।
व्रत	आठ वर्ष की अल्पायु मे बिना गुरु के ही पचाणव्रत रूप चर्या।
शरीर की अवगाहना	सात हाथ प्रमाण।
बालयति/बालब्रह्मचर्यव्रत	कलिग नरेश राजा 'जितशत्रु' द्वारा अपनी त्रिलोक सुन्दरी सुपुत्री राजकुमारी 'यशोदा' के विवाह हेतु प्रस्ताव किन्तु युवा वर्द्धमान द्वार विवाह से असहमति प्रगट करने के कारण से उन्होने अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत का पालन किया, इस प्रकार श्री वीर प्रभु बाल ब्रह्मचारी रहे।
राज्यकाल	राज्य सचालन नही किया।
संसार दशा में अतिम अक्षरात्मक वचन	'नम सिद्धेभ्य' कहकर पचमुष्ठि केशलोच करते है।
वैराग्य निमित्त	अनिमित्तिक (जाति स्मरण)।
वैराग्य की अनुमोदना	पाचवे स्वर्ग ब्रह्म से आठो सारस्वतादि 407820 लौकान्तिक देव वीर प्रभु के वैराग्य की अनुमोदना करने के लिए पधारते है।
कुमार काल	38 वर्ष, 7 मास और 12 दिन कुमारावस्था मे व्यतीत हुए।
दीक्षा कल्याणक	भरी यौवनावस्था में 569 ई पू 'सर्वधारी' सवत्सर मे मार्गशीष कृष्ण दशमी सोमवार 29 दिसम्बर के दिन 'हस्तोत्तरा' नक्षत्र के मध्यवर्ती समय मे पद्मासन अवस्था मे पचमहाव्रत धारण किए।
शिविका	देवताओ द्वारा लाई गई नमस्तत्व मे स्थित रत्नमयी 'चन्द्रप्रभा' नामक दिव्य पालकी/शिविका।
दीक्षा स्थान	'ज्ञातृखण्डवन' मे।
दीक्षा वृक्ष	शाल वृक्ष (जो जीव के स्वभाव की भाति ऊर्ध्वगामी होता है)
दीक्षासन	एक स्वच्छ, स्निग्ध, निर्मल, गोल, चन्द्रकान्तमयी, पवित्र, इन्द्राणी द्वारा रत्नचूर्ण से 'स्वास्तिक' चिन्ह से अलकृत, स्फटिक मणि के शिलापट्ट पर पूर्वाभिमुख होकर।
दीक्षा के साथी	दीक्षा ग्रहण अकेले ही की थी।

दीक्षा गुरु	स्वय (स्वयबुद्ध)
मन. पर्यय ज्ञान	दीक्षोपरान्त अर्न्तमुहुर्त मे मनः पर्यय ज्ञान प्रगट हो गया था।
दीर्घ मौन	दीक्षोपरान्त 12 वर्ष 7 मास 21 दिन पर्यन्त तक अखण्ड मौन अवस्था मे रहे थे।
प्रथम आहार (पारणा)	दो दिवस की तपश्चर्या के उपरान्त मार्गशीर्ष कृष्ण द्वादशी के दिन 'कूल' ग्राम नगर के नगरपति 'राजा कूल' ने अपने राजाप्रासाद मे 'गौरस द्वारा निर्मित क्षीर' (परमान्न) का आहार समर्पित किया था।
दीक्षोपरान्त प्रथम उपवास	सर्वप्रथम छ. दिन का उपवास किया था।
नारी/दासी उद्धार	'वत्सदेश' की 'कौशाम्बी' नगरी मे तीन दिन की उपवासी, दासी के रूप मे राजकुमारी 'चन्दना' (प्रभु की मावसी) से, 5 माह 25 दिन के उपवासी श्री वीर प्रभु ने कोदो का पारणा ग्रहण किया था।
उपसर्ग कर्ता	'हुण्डावसर्पिणी काल' के दोष के कारण 'स्थाणुभद्र' नामक 'अन्तिम रुद्र' द्वारा, अनेक भयकर तथा नाम-कृति, स्थूलकाय पिशाचो के सग, सर्वाधिक, करोडो उपसर्ग।
उपसर्ग स्थान	'उज्जयिनी' नगरी के समीपस्थ 'क्षिप्रावती' नदी के किनारे 'अतिमुक्तक' नामक भयानक शमशान में, 'प्रतिमायोग ध्यानमुद्रा मे।
उपवास	बारह वर्षो से भी अधिक महाकठिन तपावधि मे केवल 349 दिन पारणा किया शेष समस्त दिन 'निर्जल उपवास' किये थे।
श्रमणचर्यावधि	12 वर्ष 5 मास 15 दिन।
अतिशय	चौतीस अतिशयो से युक्त।
तीर्थकर अरिहन्त के गुण	46 गुणो से विभूषित।
ज्ञान कल्याणक	'बिहार (मगध)' प्रान्त मे 'जृम्भिका' नामक ग्राम के समीप, 'सृजुकूला' नदी के किनारे, 'मनोहर' नामक वन मे, 'शाल' वृक्ष के नीचे, 'महारत्न' शिलातल पर 42 वर्ष की अवस्था मे षष्ठोपवासी होकर 'प्रतिमायोग' ध्यानमुद्रा मे 557 ई पू 'शार्वरी' सवत्सर की वैशाख शुक्ल दशमी के दिन रविवार, 26 अप्रैल को 'हस्तोत्तरा'–'फाल्गुनी' के शुभ चन्द्र स्थिति में नक्षत्र की शुभ लग्न योगादि के होने पर अपराह्न (तीसरे प्रहर के प्रारम्भ) में '4 घातिया कर्मो' का क्षय करके 'कैवल्य ज्ञान' की प्राप्ति अर्थात 'सर्वज्ञ' हो गये। शरीर 'परमौदारिक' हो जाने से प्रभु भूमि से 5000 धनुष ऊपर उठ गये थे।
'समवसरण' रचना	'सौधर्मेन्द्र' की आज्ञा से 'कुबेर', प्रभु के कैवल्यज्ञान प्राप्ति के मात्र दो घड़ी में, नीलमणि की भूमि से सुशोभित, आकाश में, (सर्व तीर्थकरो में सबसे छोटा) एक योजन प्रमाण, विशाल पृथ्वी से 5000

धनुष ऊपर, बारह प्रकोष्ठों वाला, ऐसे अद्भुत 'समवसरण' सभा मण्डप की रचना कर देता है जहा जाति विरोधी जीव भी शान्त, निर्भय होकर एक साथ बैठते थे। वहा रात्रि-दिवस का कोई भेद नही होता है। तीर्थकर प्रभु का मुख चारो दिशाओं से दिखाई देता था। पृथ्वी से समवसरण तक 2000 सीढ़िया, एक-एक हाथ के अन्तराल पर बन जाती है जिन पर चढ़कर बालक, युवा, वृद्ध, तिर्यञ्च सभी मात्र अर्न्तमुहुर्त मे ऊपर पहुच जाते है।

आसन	वीर प्रभु, रत्न जडित, स्वर्णमयी, दिव्य, अलौकिक सिहासन से चार अगुल ऊपर अधर मे विराजमान रहते थे।
प्रथम देशना पूर्व मौन	'हुण्डवसर्पिणी' काल-दोष के कारण प्रथम देशना से 66 दिन पूर्व तक प्रभु की वाणी गणधर के अभाव मे नही खिर पाई थी।
गुरु पूर्णिमा का प्रारम्भ	इन्द्रभूति गौतम, ब्राह्मण द्वारा वीर प्रभु की चरण शरण मे दीक्षा लेने का वह स्वर्णिम दिवस 'गुरु पूर्णिमा दिवस' के रूप मे विख्यात हो गया।
प्रथम देशना/उपदेश	43 वर्ष की आयु मे श्रावण कृष्ण प्रतिपदा, शनिवार 1 जुलाई 557 ई पू के दिन सूर्य के उदय होने पर 'रौद्र' नामक मुहुर्त मे चन्द्रमा के 'अभिजित' नक्षत्र होने पर 'राजगृही' के 'विपुलाचल' पर्वत पर प्रथम देशना हुई।
वीर शासन जयन्ती पर्व/ वीर शासन उदय	श्रावण कृष्ण प्रतिपदा को प्रतिवर्ष मनाया जाने लगा।
धर्मोपदेशावधि	प्रतिदिन प्रात , दोपहर, साय और रात्रि (वहा रात्रि नही होती) मे (4 कुल बार) छ छ घडी पर्यन्त (1 घडी = 25 मिनट) अर्थात् प्रतिदिन लगभग 10 घन्टे तक।
दिव्य ध्वनि	मधुर, शुभ, रमणीय, निरक्षर, कण्ठ, तालु-दात, ओष्ठादि के कम्पनादि व्यापार रहित, अस्खलित, 'ॐकार स्वरूप', अनेक बीजाक्षरो से गर्भित 18 महाभाषाओ और 700 क्षुल्लक भाषाओ से गर्भित अर्थात सम्पूर्ण भाषात्मक-सर्वग्राह्य, मगध जाति के देव द्वारा 'अर्धमागधी भाषा' मे परिणमित, समीप और दूर से समान रूप से ग्राह्य, एक योजन पर्यन्त प्रवाहित, गम्भीर, निराबाध, नियमित, विशद मनोहर, स्याद्वाद, अनेकान्तमयी, सप्तभगी, निश्शेभावात्मक, इच्छित वस्तु कथनपरक, विभ्रम व दोष रहित, एक समय मे ही भव्यजनो के मोह रूपी महान अन्धकार को नष्ट करती, सूर्य के समान दैदीप्यमान, मन्दराचल की गुफा के मुख से उत्पन्न प्रतिध्वनि के समान मेघ गर्जन अनुकरण करने वाली ध्वन्यात्मक वीर प्रभु के सर्वांग से प्रस्फुटित जिसकी अक्षर रचना मे केवल गणधर

ही सक्षम होता है ऐसी अद्भुत, अनुपम, परमसुखदायिनी, आनन्दकारी दिव्य ध्वनि होती है।

दिव्य ध्वनि की विलक्षणता	छ घडी और आठ समय मे सम्पूर्ण द्वादशाग का पूर्ण पाठ हो जाता है।
गणधर	सभी ग्यारह गणधर विप्र वर्ण (ब्राह्मण) 1 इन्द्रभूति गोतम-प्रथम, मुख्य गणधर, 2 अग्निभूति 3 वायुभूति (तीनो सहोदर) 4. सुधर्म 5 मौर्य 6 मौन्द्रय 7 पुत्र 8 मैत्रेय 9 अकम्पन 10 अन्धवेल 11 प्रभास।
अगों व पूर्वो की रचना	इन्द्रभूति गोतम गणधर मात्र एक अन्तर्मुहुर्त मे समस्त द्वादशाग व चौदह पूर्वो की अद्भुत रचना कर देते है।
चर्तुविध सघ	भगवान के सघ (चर्तुविघ) में 700 केवली प्रभु, 500 मन पर्याय ज्ञानी, 311 अगपूर्वधर, 1300 अवधिज्ञानी, 900 विभिन्न विक्रिया ऋद्धि धारी, 400 अनुत्तरवादी, 9900 शिक्षक मुनि, इस प्रकार कुल 14011 श्रमण, 36000 साध्विया जिनमे प्रमुख आर्यिका गणिनी चन्दना माता अधिष्ठात्री, 1 लाख श्रावक, 3 लाख श्राविकाए, प्रमुख शिष्य/श्रोता-मगधपति महाराज श्रेणिक बिम्बसार थे। अनुयायी अगणित थे। सज्ञी पचेन्द्रिय तिर्यच सख्यात। इस प्रकार सभी जाति के देव, देवियां, श्रावक, श्राविकाए, श्रमण, श्रमणाए, मनुष्य और तिर्यच (पशु-पक्षी) भगवान की समवसरण सभा मे बैठकर दिव्य ध्वनि श्रवण करते है।
सम्पूर्ण भारत में मगल विहार	केवली वीर प्रभु ने भव्यजनो के पुण्य योग से भारत मे सर्वत्र विहार किया। वे जहा-जहा विचरते चरणो के नीचे 225 स्वर्णिम कमलो की अद्भुत रचना हो जाती थी। वे 'काशी, काश्मीर, कुरु कोशल, कामरूप, कच्छ, कलिग, कुरुजागल, किष्किन्धा, मगध, मल्लदेश, पाचाल, केरल, भद्रकार, चेदी, दशरिंग, बग, अग, आन्ध्र, कुशीनगर, मलय, विदर्भ, गोण, सप्न्व, त्रिगर्त, पटचर, मोक, मत्स्य, कनी, सूरसन, वृकार्थ, कैकेय, आत्रेय, काम्बोज, बाल्हीक, यवनसिन्धु, गान्धार, सौवीर, सूर, भीरु, दंशरूक, वाडवान, भरद्वाज, क्वाथतोय और समुद्रवर्ती देश, उत्तर के तार्ण, कार्ण और पृच्छाल आदि अनेक स्थानो मे धर्म प्रभावना हेतु पधारे और वहा देशनार्थ प्रवचन किया।
विदेशों में विहार	भगवान महावीर का विहार विदेशो मे भी हुआ जिसमे आक्सीनिया, यूनान, मिश्र, बल्ख, कान्धार, लाल सागर के निकटवर्ती देश, तूरान आदि प्रमुख रूप से है।
एक स्थान में	मगध अधिपति राजा श्रेणिक बिम्बसार की नगरी राजगृही मे

सर्वाधिक विहार	16 बार प्रभु का आगमन हुआ।
अंतिम देशना	कार्तिक कृष्णा द्वादशी 527 ई.पू./मोक्ष गमन से दो दिन पूर्व वाणी का योग भी रुक गया था।
देशनाकाल	. 29 वर्ष 5 माह 20 दिन पर्यंत सम्पूर्ण वृहत्तर भारतवर्ष मे मगल विहार किया।
यक्ष	गुह्यक।
यक्षिणी	सिद्धायनी।
निर्वाण स्थल	'मल्लो' की राजधानी मध्यमा पावानगर के अनेक सरोवरो के मध्य, पद्म सरोवर की उन्नत भूमि पर स्थित महामणि शिलातल पर मण्डप के नीचे राज्यसभा के दुमन्मण्डित सम्यक उद्यान में प्रभु ने निर्वाण पद पाया था।
सिद्ध पद/मोक्ष/ परिनिर्वाण महोत्सद	छ दिन योग-निरोध करके 527 ई पू शुक्ल सवत्सर (शक स 605 वर्ष पूर्व) मे कार्तिक मास की श्याम अवस्या 15 अक्टूबर मगलवार के स्वाति नक्षत्र की प्रत्यूष बेला मे (सूर्योदय से कुछ समय पूर्व) जब हुण्डावसर्पिणी नामक चतुर्थकाल मे तीन वर्ष एव साढे आठ माह की अवधि शेष रह गई थी। सम्पूर्ण कर्मरूपी शत्रुओ तथा औदारिक आदि तीन शरीरो का क्षय कर स्वभावत उर्ध्वगीत होने के कारण एकदम निर्मल होकर सिद्ध पद (अश्विनी पद) को प्राप्त किया।
अंतिम आसन	· कायोत्सर्ग (खड्गासन)।
आयुष्य प्रमाण	71 वर्ष 3 माह 25 दिवस 12 घटे।
मोक्ष कहा से	वर्तमान सभी तीर्थंकरो का मोक्षगमन पर्वत के ऊपर से हुआ परन्तु हुण्डावसर्पिणी काल दोष के कारण भगवान महावीर को मोक्षप्राप्ति पृथ्वी से हुई।
निर्वाण के समय राजागणों की उपस्थिति	स्वय (स्वयबुद्ध) नौ लिच्छवि, नौ मल्ल (काशी-कौशलादि) 18 गणराज्यो के प्रमुख जिनमे सर्वप्रमुख राजा हस्तिपाल थे, प्रभु के निर्वाण-समय उपस्थित थे।
निर्वाण सहगामी	एक हजार मुनियो के साथ वीर प्रभु ने निर्वाण पद की प्राप्ति की थी।
शिष्यों को मोक्ष प्राप्ति	भगवान महावीर के कुल 4400 शिष्यो का मोक्ष पद की प्राप्ति हुई थी।
निर्वाण	· भस्म राशि
आन्विक्षिकी	गणतत्र
तीर्थकाल	इक्कीस हजार बयालीस वर्ष।
दीपावली पर्व	श्री वीर प्रभु के निर्वाण समय से प्रतिवर्ष यह महान पर्व दीपोत्सव-पर्व

के रूप में मनाया जा रहा है।

वीर निर्वाण सम्वत	श्री वीर प्रभु के निर्वाण दिवस से ही वीर स का प्रचलन हो गया था।
अनुबद्ध केवली	तीन अनुबद्ध केवली 1 'गौतम स्वामी', 2 'सुधर्म स्वामी', 3 'जम्बू स्वामी', भगवान महावीर के निर्वाण गमन के पश्चात् 62 वर्षो मे मोक्ष को गये थे।
श्रुत केवली	तीन अनुबद्ध केवलियों के पश्चात् 100 वर्षों मे 5 श्रुत केवली, 1 विष्णुनन्दि, 2 नन्दिमित्र, 3 अपराजित, 4 गोवर्धन और 5 भद्रबाहु (अतिम श्रुत केवली) हुए थे।
केवली	भगवान महावीर के निर्वाण के पश्चात् गौतम गणधरादि श्रीधर पर्यंत कुल 8 केवली हुए।
अग ज्ञान	भगवान महावीर के मोक्ष गमन के पश्चात कुल 686 वर्षो पर्यत अग ज्ञान रहा।
धर्म शासन	प्रभु श्री वीर के कैवल्य ज्ञान की प्राप्ति के समय से वर्तमान पंचम काल के अत तक महावीर स्वामी का धर्म शासन प्रवर्तता रहेगा।
प्रमुख सिद्धात	1 अहिसा, 2 सत्य, 3 अस्तेय, 4 ब्रह्मचर्य व 5 अपरिग्रह।
मूल उपदेश	जीओ और जीने दो।
विश्व की विद्याए	विश्व कल्याण हेतु भगवान महावीर ने चार विद्याए दी 1 जलतरणी, 2 नभतरणी, 3 थलतरणी, 4 भवतरणी।
उपदेश का सक्षिप्त सार	• प्रत्येक आत्मा स्वतत्र है। कोई किसी के आधीन नही है। • सब आत्माए समान है। कोई छोटा बडा नहीं है। • प्रत्येक आत्मा अनन्तज्ञान और सुखमय है। सुख कही बाहर से नही आता है। • आत्मा ही नही, प्रत्यक पदार्थ स्वय परिणमनशील है। उसके परिणमन मे पर-पदार्थ का कोई हस्तक्षेप नही है। • सब जीव अपनी भूल से ही दुखी है और स्वय अपनी भूल सुधार कर सुखी हो सकते है। • अपने को नही पहचानना ही सबसे बड़ी भूल है तथा अपना सही स्वरूप समझना ही अपनी भूल सुधारना है। • भगवान कोई अलग नही होते। यदि सही दिशा मे पुरुषार्थ कर तो प्रत्येक जीव भगवान बन सकता है। • स्वय को जानो, स्वय को पहचानो और स्वय मे समा जाओ, भगवान बन जाओगे। • भगवान जगत का कर्ता-हर्ता नही। वह तो समस्त जगत का मात्र ज्ञाता-दृष्टा होता है।

• जो समस्त जगत को जानकर उससे पूर्ण अलिप्त वीतराग रह सके अथवा पूर्ण रूप से अप्रभावित रहकर जान सके, वही भगवान है।

विरोध — अन्ध परम्परा, अन्धविश्वास, रुढिवादिता, कर्मकाण्ड आदि का महावीर स्वामी ने कडा विरोध किया।

संदेश
• प्रमाद मत करो।
• अपने कर्त्तव्य का ईमानदारी से पालन करो।
• उचित परीक्षण के बाद ही ग्रहण करो।

भारत की स्वतत्रता में भगवान महावीर का योगदान .

आज के भारत-गणराज्य के सविधान के मुखपृष्ठ पर तीर्थकर महावीर स्वामी का चित्र अकित है और उसके नीचे लिखा है– "भगवान महावीर के सिद्धात 'अहिसा' के आधार पर ही इस देश को स्वतत्रता प्राप्त हुई।" राष्ट्रीय ध्वज तिरगे के मध्य में स्थित धर्म चक्र के चौबीस विभाग 24 तीर्थकरो के द्योतक है अर्थात महान जैन धर्म की पताका ही पूरे भारत क्या वरन् पूरे विश्व मे ही लहरा रही है और लहराती ही रहेगी।

जय महावीर!

पुस्तक प्रकाशन जगत में मंदी के इस दौर में भी

क्रांतिकारी संत के साहित्य की मांग नई ऊंचाइयों पर

दुनिया भर के आकडे इस बात के गवाह हैं कि पिछले लगभग दस वर्षों मे जनजीवन मे ऑडियो-वीडियो मनोरंजन और इटरनेट के निरन्तर बढ़ते हस्तक्षेप ने पुस्तक, पत्र-पत्रिकाएं आदि पढ़ने के प्रति लोगो की रुचि को काफी कम किया है। कुछ अपवादो को छोडकर पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय पर इस प्रवृत्ति का बहुत प्रतिकूल प्रभाव पडा है। लेकिन पुस्तक प्रकाशन के लिए मदी के इस दौर मे भी किसी की नई-पुरानी पुस्तके न केवल निरन्तर छपती रहें बल्कि उनकी मांग भी आश्चर्यजनक रूप से निरन्तर बढती रहे तो इसे 'अजूबा' ही कहा जायेगा।

दिल्ली के तरुण क्राति मच ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित क्रातिकारी सत मुनिश्री तरुणसागर जी महाराज की पुस्तको का बडी सख्या मे प्रकाशन और उनकी निरन्तर बढती माग ऐसा ही 'अजूबा' बनी हुई है। पिछले दिनो पूज्यश्री के दो माह के जयपुर प्रवास के दौरान लोगो ने साहित्य-स्टॉल से 50000 से अधिक पुस्तके क्रय की। जयपुर प्रवास के दौरान मुनिश्री की बहुचर्चित पुस्तक **'क्रांतिकारी सूत्र'** का पुनर्प्रकाशन किया गया। एक विशाल धर्मसभा मे विमोचन के तुरन्त पश्चात् इस पुस्तक की 3000 प्रतिया श्रद्धालुओं ने क्रय कर ली और इसके बावजूद भी पुस्तक की माग निरन्तर बनी रही और उसे पुन छपवाने के आदेश दिए गए। जयपुर मे भट्टारकजी की नसियां पर आयोजित एक विशाल सभा मे मुनिश्री के साहित्य का स्टॉल लगाया गया था जिसमे मुनिश्री की नई पुस्तक **'मैंने सुना है'** की लगभग 2000 प्रतिया उपलब्ध थी। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन मे इस पुस्तक मे प्रकाशित एक प्रवचन का जिक्र करते हुए उसके कुछ अशो को उद्धृत कर दिया जिसका श्रोताओ ने करतल ध्वनि से भारी स्वागत किया। प्रवचन समाप्त होते ही श्रद्धालुओ की भारी भीड साहित्य स्टॉल पर उमड पडी। हर कोई **'मैंने सुना है'** माग रहा था। स्टॉल पर कार्यरत कार्यकर्ताओ को भीड का सभालने मे भारी मुश्किल का सामना करना पडा। मात्र 15-20 मिनट के समय मे पुस्तक की सारी प्रतिया समाप्त हो गई। जयपुर मे 25 दिसम्बर, 2000 को मुनिश्री ने ऐतिहासिक बडी चौपड पर 50000 से अधिक के विशाल जनसमुदाय को सम्बोधित किया। अनेक श्रद्धालुओ की माग पर मुनिश्री ने अपने इस प्रवचन को पुस्तक के रूप मे लिपिबद्ध कर दिया और तत्काल उसका प्रकाशन **'क्रातिकारी प्रवचन'** नाम से कराया गया। जयपुर मे ही रामलीला मैदान मे आयोजित 'महावीरोदय-2600' नामक एक विशाल जनसभा म राजस्थान के पूर्व मुख्यमत्री श्री भैरोसिह शेखावत ने इस पुस्तक का विमोचन किया। विमोचन के पश्चात् जैसे ही इस पुस्तक की बिक्री आरम्भ की गई, मात्र 10-15 मिनटो मे ही 10000 प्रतियो का पहला सस्करण समाप्त हो गया और अगले ही दिन इस पुस्तक की 5000 प्रतियां दोबारा छपवानी पडीं। इससे पूर्व जयपुर के प्रसिद्ध जयनिवास उद्यान मे आयोजित मुनिश्री की अमृत प्रवचन-माला में तो पुस्तकों की बिक्री का आलम यह था कि वहा बिक्री कम और लूट-खसोट ज्यादा दिखाई पड रही थी। प्रत्यक्षदर्शियो के अनुसार स्थिति यह थी कि वहा मौजूद हर व्यक्ति मुनिश्री की कोई भी एक पुस्तक किसी भी कीमत पर हासिल कर लेना चाहता था। ऐसे मे अगर यह कहा जाये कि मुनिश्री का साहित्य छीन-झपट कर पढा जाता है तो कोई अतिशयोक्ति नही होगी। आज हालत यह है कि पूज्यश्री के साहित्य की माग के अनुसार आपूर्ति नहीं हो पा रही है। देश भर मे मुनिश्री के साहित्य की जबर्दस्त मांग है और इसी माग को देखते हुए तरुण क्राति

मंच ट्रस्ट, दिल्ली ने वर्ष 2001 के प्रथम चरण (जनवरी-फरवरी) मे 80000 पुस्तको के पुनर्मुद्रण के आदेश जारी किए है। उल्लेखनीय है कि वर्ष 2001 मे मुनिश्री के साहित्य की लगभग तीन लाख प्रतिया प्रकाशित होने की संभावना है। क्या आप सोच सकते है कि वर्तमान काल मे धार्मिक पुस्तके और वो भी लाखों की संख्या मे प्रकाशित होगी ? आखिर कुछ तो है इस क्रातिकारी सत के साहित्य मे जो कि दुनिया उसकी दीवानी हो रही है। मुनिश्री के साहित्य की इस जवर्दस्त माग के पीछे सबसे बडा कारण है उनकी सुरुचिपूर्ण सामान्य भाषा, छोटे-छोटे वाक्य और रोचक उदाहरण। मुनिश्री की पुस्तकों को पढते हुए पाठक कभी भी बोर नहीं हो सकता। मोटे-मोटे धर्मशास्त्रो के बडे-बडे सिद्धान्तो को मुनिश्री अपनी छोटी-छोटी पुस्तको में हंसते-हंसाते समझा देते है। उनकी पुस्तको को पढते हुए ऐसा प्रतीत होता है जैसे हम अपने घर-परिवार या पास-पडौस की ही कोई कहानी पढ रहे हो और इन सबसे ऊपर जो महत्वपूर्ण बात हे, वो यह कि मुनिश्री की लेखन शैली ऐसी है कि पुस्तक पढते हुए भी ऐसा लगता हे कि जैसे हम स्वय मुनिश्री के समक्ष बैठकर उनके मुखारविद से प्रवचन सुन रहे हो। एक अन्य महत्वपूर्ण मुद्दा है **पुस्तकों की कम कीमत**। तरुण क्राति मच ट्रस्ट और कुछ श्रद्धालुओं के सहयोग से मुनिश्री का सम्पूर्ण साहित्य लागत से भी कम मूल्य पर उपलब्ध कराया जा रहा है। छोटी पुस्तके मात्र 10 रुपए मे और पक्की जिल्द वाली 200 पृष्ठीय पुस्तके मात्र 20-25 रु मे सुलभ है। पुस्तको के सुन्दर रूप-रग व वढिया छपाई तथा कागज आदि के कारण ये पुस्तके सहज ही पाठको का मन मोह लेती है।

अपने पिछले तिजारा चातुर्मास के दौरान मुनिश्री ने भगवान महावीर के 2600वे जन्मोत्सव क अवसर के लिए भगवान महावीर के व्यक्तित्व और कृतित्व को प्रदर्शित करते छोटे-छोटे सदेशो से युक्त **'महावीरोदय'** नामक एक वहुउपयोगी पुस्तक की रचना की। प्रथम सस्करण के रूप मे इस पुस्तक की 2000 प्रतिया प्रकाशित की गई। भगवान महावीर का जन्मोत्सव अप्रैल माह मे आना हे लकिन यह पुस्तक अपनी उपयोगी सामग्री और सुन्दर कलेवर के कारण दिसम्बर 2000 मे ही समाप्त हो गई ओर अब पुन इसकी 5000 प्रतिया प्रकाशित की गई हे। मुनिश्री की सर्वाधिक चर्चित कालजयी कृति **'मृत्युबोध'** की तो यह स्थिति है कि मुनिश्री जहा भी कही होते हे वहा इस पुस्तक की जवर्दस्त माग बनी रहती है और देश भर से भी इसकी माग निरन्तर आती रहती हे। इस पुस्तक का प्रकाशन निरन्तर चलता रहता हे और 5-10 हजार क सस्करण निरन्तर छपते रहते है। मुनिश्री के साहित्य की इस भारी माग ने उन लोगो के मुह वद कर दिये है जो यह कहते हे कि आज के युग मे कोई धार्मिक साहित्य नही पढना चाहता। मुनिश्री ने सिद्ध किया हे कि विषय नया हो, प्रस्तुतिकरण अच्छा हो ओर भाषा जन-सामान्य को ध्यान मे रखकर लिखी गई हो तो पाठक जरूर एसे साहित्य को स्वीकार करते हे। मुनिश्री ने अपने साहित्य के माध्यम से धार्मिक साहित्य को नई परिभाषा दी है, नए आयाम दिये है। नि सन्देह जैन साहित्य के क्षेत्र मे मुनिश्री तरुणसागर जी महाराज आज सर्वोच्च स्थान पर पहुच गये है। मुनिश्री ने अपनी पुस्तको के माध्यम से जैन दर्शन व सिद्धान्तो को व्यापक स्तर पर जैनेतर समाजो तक भी पहुचाया है।

वीर प्रभु से प्रार्थना है कि पूज्यश्री की लेखनी को और भी अधिक बल प्रदान करे ताकि उससे अधिकाधिक जनोपयोगी साहित्य प्रसूत हो सके और पीडित-त्रस्त मानवता उससे दिशा-निर्देश प्राप्त करके सुखी और सफल जीवन के पथ पर अग्रसर हो सके।

–राजीव जैन, दिल्ली

मुनि श्री तरुणसागर जी का पठनीय साहित्य — एक परिचय

1. दुःख से मुक्ति कैसे मिले?

22 मननीय प्रवचनो का अपूर्व सकलन, जीवन से जुडी समस्याओ का सटीक समाधान।

मूल्य 25 रुपये

2. क्रोध को कैसे जीतें?

(हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती व मराठी)

जन-जन की समस्या क्रोध है। हर आदमी क्रोध से परेशान है, पीडित हे। 'क्रोध को कैसे जीतें?' पुस्तक क्रोध से मुक्ति दिलाने में पूर्ण समर्थ हे। दिल को लुभाने वाली मुनिश्री की विशिष्ट शेली से कृति चर्चित बन पड़ी हे।

मूल्य · 10 रुपये

3. प्रेस-वार्ताएं

प्रेस-वार्ताए अपने आप मे एक अनूठी पुस्तक हे। इन्दौर, भोपाल, कोटा, मेरठ, दिल्ली आदि मे आयोजित विशिष्ट वार्ताओ का अपूर्व प्रकाशन।

मूल्य 10 रुपये

4. चपल-मन

दिल ओर दिमाग को झकझोर देने वाली कविताए, पढने बेठो तो पढते ही जाओ। मुनिश्री की पहली ओर बहुचर्चित कृति।

मूल्य 20 रुपये

5. जैन बाल भारती (भाग 1, 2, 3, 4)

जैन धर्म के प्रारभिक ज्ञान हेतु सर्वश्रेष्ठ बाल प्रकाशन। नई शेली मे जेन धर्म के क्लिप्ट विपयो की सुन्दरतम प्रस्तुति।

मूल्य 10 रुपये

6. मन को कैसे जिएं?

मन चचल हे, चपल हे, क्यो? चचल मन को केसे रोके, इस प्रश्न का त्वरित समाधान प्रस्तुत कृति में मिलेगा।

मूल्य 10 रुपये

7. जीवन क्रांति का सूत्र–मृत्यु-बोध

जीवन के शाश्वत सत्य 'मृत्यु' पर एक मोलिक कृति जिसका एक-एक वाक्य इतना सरस, मीठा, पवित्र, जीवन्त व ताजगी लिये हुए हे कि मन को हर वाक्य पर सोचने को मजबूर कर देगा।

मूल्य 10 रुपये

8. क्रांतिकारी सूत्र (सिर्फ आठ लाइन)

जीवन तथ्यो व आगम ग्रथो का निचोड, मनमोहक भाषा मे, मनभावन शैली मे, सक्षिप्त में, अति महत्वपूर्ण तथ्यों व सत्यो का उद्घाटन प्रस्तुत करती कृति।

मूल्य . 30 रुपये

9 मुकुट : जब झुकने लगे

23 अगस्त, 97 को दिल्ली के रामलीला मेदान मे भारत सरकार के गृह मत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के मुख्य आतिथ्य मे प्रदत्त प्रवचन जिसमे आप पढेगे कुलकर नाभिराय के जीवन का एक प्रसग आपके जीवन के लिए।

मूल्य 10 रुपये

10. एक लड़की

मुनिश्री द्वारा 5 जुलाई, 1997 को दिल्ली के ऐतिहासिक परेड ग्राउड, लाल किला मेदान मे दिया गया भ्रूण-हत्या पर एक विशेष प्रवचन। विषय की प्रस्तुति कुछ इस तरह हे कि बस पढते जाओ ओर हसते जाओ, रोते जाओ।

मूल्य 10 रुपये

11. एक था सेठ

मुनिश्री द्वारा 30 अगस्त, 98 को जेन बाग, सहारनपुर मे प्रदत्त एक कथा-प्रवचन। जीवन की सच्चाइयो ओर अध्यात्म की गहराइयो का अपूर्व चिन्तन।

मूल्य 10 रुपये

12 क्रांतिकारी सत

प्रसिद्ध लेखक श्री सुरेश 'सरल' द्वारा लिखित मुनि श्री तरुण सागर जी की अनुपम ओर प्रेरणादायक जीवन-गाथा।

मूल्य 50 रुपये

13. महावीरोदय

महावीर स्वामी की 2600वी जन्म जयन्ती पर भगवान महावीर के जीवन ओर दर्शन पर 54 स्फुट सूत्रो का अपूर्व सचयन।

मूल्य · 20 रुपये

14. तरुण-क्रांति

ब्र शेलेन्द्रजी द्वारा लिखी पूज्य मुनिश्री के जीवन ओर दर्शन की सक्षिप्त झलक।

मूल्य 5 रुपये

15. एक और प्रवचन

26 मई, 1999 को दिगम्बर जेन कॉलेज, के सी. फील्ड, बडोत मे दिया गया 'एक और प्रवचन'। सबसे हटकर, सबसे बढकर।

मूल्य . 10 रुपये

16 मैं सिखाने नहीं, जगाने आया हूं

श्री मुकेश नायक (उच्च शिक्षा मंत्री, मध्यप्रदेश शासन) द्वारा सपादित। मुनिश्री के भोपाल प्रवास जनवरी 94 मे 33 जीवनोपयोगी चिंतनपूर्ण विषयो पर हुए प्रवचनों का सुन्दर प्रकाशन।

मूल्य : 25 रुपये

17. इक्कीसवीं सदी और अहिंसा-महाकुंभ (राष्ट्र के नाम संदेश)

30 नवम्बर 1997 को लाल किले, 1 जनवरी 1999 को विश्वविख्यात 'हर की पैडी', हरिद्वार तथा 1 जनवरी 2000 को लाल किले से मास निर्यात के विरोध मे आयोजित राष्ट्रव्यापी अहिसा-महाकुभ मे सैकडो सतो और लाखो श्रोताओ के मध्य मुनिश्री का राष्ट्र के नाम संदेश। धर्म, समाज और राष्ट्र पर एक ज्योतिर्मय चिन्तन।

मूल्य : 20 रुपये
10

18. तरुणसागर-उवाच

इन्दोर और मेरठ के विभिन्न स्थानो पर मुनिश्री द्वारा किये गये अमृत प्रवचनो का सार सक्षेप।

मूल्य : 10 रुपये
10

19. मुझे आपसे कुछ कहना है (हिन्दी व अंग्रेजी)

इन्दोर मे 26 जनवरी, 1995 को राजवाडा पर एतिहासिक धर्मसभा मे मुनिश्री द्वारा दिया गया एक क्रातिकारी प्रवचन, जो सिखाता है जीवन जीने की कला।

मूल्य 10 रुपये

20 पब्लिक प्रवचन

जन-साधारण के मध्य दिया गया एक अमृत प्रवचन जो सिखाता है कि जीवन को स्वर्ग केसे बनाये, तनावो स मुक्त कैसे हो।

मूल्य 10 रुपये

21. मैं तुम्हें टेर दे रहा हूं

पूज्यश्री के प्रवचन-साहित्य की शृखला मे एक ओर महत्वपूर्ण पुस्तक। मुनिश्री की वाणी मे कुछ ऐसा जादू है कि लोग उनके प्रवचनो को सुनते नही अघाते। जो लोग उनके प्रवचनो को प्रत्यक्ष नही सुन पाते, उन्हे हम साहित्य के माध्यम से संतुष्ट करते है। मुनिश्री के विशिष्ट प्रवचनो का एक नया सकलन।

मूल्य . 10 रुपये

22. मैंने सुना है

पूज्यश्री द्वारा भारत प्रसिद्ध दिगम्बर जैन तीर्थ तिजारा चातुर्मास-2000 मे प्रत्येक रविवार को हुए विशेष प्रवचनों का सग्रह।

मूल्य : 25 रुपये

23. अमृत प्रवचन-माला

जैन धर्म के इतिहास में पहली बार क्रातिकारी सत मुनिश्री तरुण सागर जी महाराज द्वारा जैन धर्म के सिद्धान्तो का 'जी न्यूज़ चेनल' से विश्व के 122 देशो मे प्रसारण। इसी 'अमृत प्रवचन-माला' के कैसेटो का सेट। सेट-1 (1-10), सेट-2 (11-20)

प्रत्येक कैसेट 25 रु

24. अहिंसा-महाकुंभ (मासिक पत्रिका)

मुनिश्री के विचारो की प्रतिनिधि पत्रिका।

सरक्षक सदस्यता 1100 रु, पचवार्षिक शुल्क 500 रु, त्रैवार्षिक शुल्क 300 रु

आप भी पढ़िये, औरों को भी पढ़वाइए।

अपनी मांग तत्काल भेजें।

साहित्य डाक व वी.पी.पी. द्वारा भेजने की सुविधा उपलब्ध है।

डाक शुल्क अतिरिक्त होगा।

मनीऑर्डर या ड्राफ्ट 'अहिंसा-महाकुंभ', फरीदाबाद के नाम देय बनवायें।

•

साहित्य मगाने हेतु सम्पर्क सूत्र

मुकुल जैन, सम्पादक–'अहिंसा महाकुंभ'

196, सैक्टर-18, फरीदाबाद (हरियाणा)

दूरभाष : 5262549

मुनिश्री के कार्यक्रमो व अन्य जानकारी हेतु सम्पर्क सूत्र .

तरुण क्रांति मंच ट्रस्ट (रजि.)

70, डिफेन्स एन्क्लेव, दिल्ली-110092. फोन : 2223123